सर्वहारा दृष्टिकोण

सोशलिस्ट यूनिटी सेन्टर ऑफ इण्डिया (कम्युनिस्ट) का मुखपत्र (पाक्षिक)

डिजीटल बुलेटिन -3 | मुख्य संपादक कॉमरेड प्रभास घोष | 10 पृष्ठ | 12 मई, 2020

कोरोना महामारी ने कर दिया साम्राज्यवाद-पूंजीवाद के बदसूरत चेहरे को बेनकाब

24 अप्रैल को पार्टी के 73वें स्थापना दिवस पर कॉमरेड प्रभास घोष

(हमारी पार्टी एसयूसीआई (कम्युनिस्ट) के 73वें स्थापना दिवस पर 24 अप्रैल, 2020 को पार्टी के महासचिव कॉमरेड प्रभास घोष ने शिवपुर पार्टी सेंटर में आयोजित एक बैठक को संबोधित किया। उल्लेखनीय है कि कोरोना वायरस महामारी के संक्रमण की चपेट में देश के हजारों लोग आ जाने के कारण इस साल पार्टी स्थापना दिवस पर किसी भी राज्य में केन्द्रीय जनसभा नहीं हो पाई। इस भाषण के प्रकाशित होने से पहले कॉमरेड प्रभास घोष ने इसमें स्वयं कुछ संयोजन और सुधार किये हैं। मूल रूप से बंगाली में दिए गए इस भाषण का हिन्दी रूपांतर हम यहां प्रकाशित कर रहे हैं। अनुवाद में कमी-खामी के लिए पूर्णतः हम जिम्मेदार होंगे।– सम्पादक स. दृ.)

कॉमरेड्स,

24 अप्रैल एसयूसीआई (कम्युनिस्ट) का स्थापना दिवस है। यह दिन हमारी पार्टी के हर स्तर के नेताओं, कार्यकर्ताओं, समर्थकों, शुभचिंतकों और भारत के वर्ग-सचेत आम लोगों के लिए गहरे आवेग से भरा दिन है। हर साल इस दिन हम विभिन्न राज्यों में केन्द्रीय जनसभाओं का आयोजन करते हैं और इन जनसभाओं में हम पार्टी के संस्थापक, महान मार्क्सवादी चिंतक, अपने शिक्षक कॉमरेड शिवदास घोष की सीखों को याद करते हुए मौजूदा हालात के मुताबिक हमारा जो फर्ज बनता है, उस पर चर्चा करते हैं। लेकिन इस साल हम एक अत्यंत असामान्य हालात से गुजर रहे हैं। इस स्थिति में शिवपुर सेंटर के कॉमरेडों ने मुझे कुछ बात रखने का आग्रह किया है। लेकिन यह काम बहुत मुश्किल है। इस समय पूरी दुनिया में और भारत में जो परिस्थिति पैदा हुई है, जिस विकट संकट में लोग फंस गये हैं, वह हम सभी के लिए बहुत ही पीड़ादायक है। दुनिया में आज लाखों घरों में नाते-रिश्तेदारों के खोने की चीख-पुकार सुनाई दे रही है। जब तक हम इस सभा का समापन करेंगे, तब तक कोरोना से संक्रमित और मरने वालों की तादाद कई हजार बढ़ चुकी होगी। इस तरह की परिस्थिति में अत्यंत पीड़ा के साथ भारी मन लेकर मुझे काफी हद तक अपने आप से संघर्ष करते हुए बोलना पड़ रहा है।

इस महामारी का हमला कब रुकेगा, और कितनी लाख मौतें होंगी?–यह पूरी तरह अनिश्चित है। जो सवाल मुझे काफी परेशान कर रहा है, वह यह कि इतनी बड़ी तादाद में लोगों का इस बीमारी से संक्रमित होना और इतने बड़े पैमाने पर लोगों की मृत्यु होना- क्या यह अपरिहार्य था? मेरा मानना है कि निश्चय ही ऐसी बात नहीं है। हालांकि, इस महामारी का हमला पूरी तरह से एकाएक हुआ है और इसके इलाज व रोकथाम की दवा की खोज अब तक भी नहीं हुई है। लेकिन इस बीमारी के लक्षण क्या-क्या हैं, कैसे यह बीमारी इतनी तेजी से एक व्यक्ति से कई व्यक्तियों में फैलती है, जिसे बड़े पैमाने पर सामुदायिक फैलाव (Community mass transmission) कहा जाता है, इसके लिए क्या-क्या ऐहतियाती उपाय लिये जाते हैं और इसे बड़े पैमाने पर फैलने से कैसे रोका जा सकता है–इन सारी बातों का पता महामारी शुरू होने के थोड़ी देर बाद ही चल गया था। चीन के वुहान शहर में नवम्बर महीने के अंत में या दिसम्बर महीने के प्रारंभ में यह महामारी शुरू हुई थी। जैसा कि आप जानते हैं, भले ही चीन कम्युनिस्ट लेबल लगाकर चलता हो, लेकिन वास्तव में वहां प्रतिक्रांति के रास्ते समाजवाद को ध्वस्तकर पूंजीवाद कायम हो चुका है और अब चीन एक ताकतवर साम्राज्यवादी देश के रूप में अपने वर्चस्व के विस्तार में अमेरिकी साम्राज्यवाद के साथ तीव्र व्यापार युद्ध में संलिप्त है। हालांकि हमारे देश की सीपीआई (एम) तथा सीपीआई बेशक अभी भी चीन को कम्युनिस्ट देश मानती हैं। क्योंकि उनके जैसा ही लेबल चीन ने भी लगाया हुआ है। मैंने अखबारों में देखा कि वुहान शहर में जब पहली बार इस बीमारी का पता चला था, तब डॉ. ली नामक व्यक्ति ने इस बीमारी के हमले के बारे में चेतावनी दी थी। लेकिन चीनी अधिकारियों ने इसे महत्व देकर इसकी जांच करने के बजाय, उस डॉक्टर को फटकार लगाकर चुप करा दिया और यह कबूल करवाया कि उसने गलत किया है और खबर को दबा दिया गया। वे डॉक्टर कुछ दिनों बाद इस बीमारी का इलाज करते हुए खुद भी संक्रमित हुए और उनकी मौत हो गयी। चीन इस खबर को क्यों दबाना चाहता था? चीन को लगा था कि बाहर के लोगों को इसकी जानकारी होने पर दिक्कत हो जायेगी। वह जल्दी ही स्थिति को संभाल लेगा।

इसका कारण यह है कि वुहान शहर चीन का एक बहुत बड़ा औद्योगिक हब है। उस वुहान शहर का दुनिया के लगभग सभी पूंजीवादी-साम्राज्यवादी देशों से बहुत घनिष्ठ संबंध है। वहां सस्ती दर पर मजदूरों से काम लिया जाता है। वहां संयुक्त राज्य अमेरिका सहित कई देशों के बहुराष्ट्रीय उद्योग (Multi-national industry) हैं। भारत के साथ भी वहां का व्यापारिक संबंध है। लेकिन जब उस

(शेष पृष्ठ 2 पर)

कोरोना महामारी में लॉकडाउन के दौरान मजदूरों-गरीबों के घोर दयनीय हालात को बयां करती यह मार्मिक तस्वीर सोशल मीडिया पर वायरल हो रही है। यह तस्वीर केन्द्र और राज्य सरकारों की मजदूरों और गरीबों के प्रति आपराधिक लापरवाही, गैर जिम्मेदाराना रवैये तथा संवेदनहीनता को दर्शाने के साथ-साथ गरीबों-शोषितों को आगाह करती है कि देश में सरकारों की अदला-बदली की नहीं, बल्कि क्रांतिकारी परिवर्तन की आवश्यकता है।

कॉमरेड प्रभास घोष का भाषण

(पृष्ठ 1 का शेष)

शहर में बीमारी व्यापक रूप से फैलने लगी, तब उसे दबाकर नहीं रखा जा सका। चीन ने पहली बार 31 दिसम्बर 2019 को इस बीमारी की घोषणा की। इस दौरान वुहान शहर में कई हजार लोग मारे जा चुके थे और इससे भी ज्यादा कई हजार लोग इस बीमारी से संक्रमित हो चुके थे। चीन ने वुहान शहर को लॉकडाउन या कटऑफ कर दिया, ताकि यह बीमारी पूरे चीन में न फैले। ऐसा करने के बावजूद, चीन ने विदेश के साथ तब भी उस शहर का सम्पर्क नहीं काटा, यह जानते हुए भी कि अन्य कई देशों में इस तरह से यह महामारी फैल सकती है। उसने ऐसा इसलिए नहीं किया ताकि उसका व्यापारिक नुकसान न हो। ऐसा नहीं करना अत्यंत निन्दनीय अपराध है। हालांकि अगर वह ऐसा करता, तो यह महामारी पूरी दुनिया में इस तरह से नहीं फैलती। हवाई जहाज और जहाजों के माध्यम से इस शहर के साथ बाहरी संबंध अभी भी सामान्य थे। अखबारों में खबरें आयी थीं कि वुहान शहर में इस बीमारी से भारी तादाद में लोग मर रहे हैं। लेकिन यह जानकर भी, किसी भी साम्राज्यवादी-पूंजीवादी देश ने वाणिज्यिक स्वार्थ में वुहान शहर से तत्काल नाता नहीं तोड़ा और न ही अपने देश में इस घातक बीमारी से निपटने की कोई तैयारी की। यह भी एक गंभीर अपराध है। संयुक्त राज्य अमेरिका में पहली बार इस बीमारी के प्रकोप का मामला 21 जनवरी को सामने आया। 19 जनवरी को अधिकारियों ने राष्ट्रपति ट्रम्प को चेतावनी दे दी थी कि अगर कोरोना वायरस से लड़ने के लिए उन्होंने गंभीर कार्रवाई नहीं की, तो अमेरिकी लोग खुद का बचाव नहीं कर पायेंगे। राष्ट्रपति ने इस चेतावनी को अनसुना कर दिया। इस दौरान बीमारी पांव पसार चुकी थी और राष्ट्रपति 6 मार्च को लोगों को शांत और निश्चिंत रहने का उपदेश दे रहे थे–यह महामारी चमत्कार की तरह दूर हो जायेगी। इसके बाद, जब बड़े पैमाने पर महामारी बढ़ने लगी, तब 16 मार्च को पहली बार माना गया कि खतरा पैदा हो गया है। तब कुछ करने को बचा नहीं था। लाखों लोगों के बीच बीमारी एक चमत्कार की तरह फैल गयी और संक्रमितों तथा मृतकों की संख्या के मामले में अमेरिका शीर्ष पर पहुंच गया।

क्या यह अपरिहार्य था? अमेरिकी सरकार ने कार्रवाई करने में टाल-मटोल क्यों की? एक ओर अमेरिका चीन के साथ व्यापारिक लेनदेन बंद नहीं करना चाहता था, तो दूसरी ओर वह अपने देश में भी कारखानों और वाणिज्यिक प्रतिष्ठानों को बंद करना नहीं चाहता था और यह सब उसने किया साम्राज्यवाद-पूंजीवाद के हित में। ठीक इसी तरह इस दौरान यह महामारी इटली, स्पेन, फ्रांस और जर्मनी सहित यूरोप के विभिन्न साम्राज्यवादी देशों में फैल गयी। उन सब देशों ने भी अमेरिकी साम्राज्यवाद जैसी ही भूमिका निभायी। नतीजतन वहां हजारों लोग मारे जा रहे हैं। अमेरिकी राष्ट्रपति अपने देश में आलोचना के रूबरू होने के चलते चीन को दोषी ठहराकर खुद का दामन बचाने की कोशिश कर रहे हैं। क्योंकि कुछ ही दिनों बाद अमेरिका में चुनाव होने हैं। अमेरिकी शासक चीन से कम अपराधी नहीं हैं। भारत सरकार ने भी महामारी के संक्रमण की रोकथाम के लिए समय रहते कोई तैयारी नहीं की। हालांकि वे इस बात से अनजान नहीं थे कि इस दौरान चीन, यूरोप, संयुक्त राज्य अमेरिका, ईरान आदि देशों में महामारी के प्रकोप ने कितने भयंकर हालात पैदा कर दिये हैं।

भारत में केरल में 30 जनवरी को इस बीमारी का पहला केस सामने आया। 6 मार्च को भारत में 31 लोग कोरोना से संक्रमित हो चुके थे। जबकि 13 मार्च को देश के स्वास्थ्य मंत्री ने कहा कि यह कोई समस्या नहीं है, हम सतर्क हैं। भारत सरकार तब राष्ट्रपति ट्रम्प के शाही स्वागत की तैयारी कर रही थी। इस बीच मध्य प्रदेश में सरकार तोड़ने-बनाने का खेल भी चल रहा था। कांग्रेस के विधायकों को खरीदने में पूरा केन्द्रीय मंत्रिमंडल तथा भाजपा नेतृत्व व्यस्त था। इस महामारी को लेकर उन्हें सिर खपाने की फुर्सत कहां थी! इसके अलावा, वाणिज्यिक स्वार्थ में चीन सहित सारी दुनिया के साथ विमानों और जहाजों की आवाजाही 25 मार्च तक पूरी तरह से जारी रखी गयी थी। नतीजतन, बीमारी से संक्रमित भारी तादाद में लोग विदेशों से यहां आये, जिनके संपर्क से बीमारी फैलने लगी। यह जानते हुए भी 23 मार्च तक संसद का सत्र चलाया गया। 24 मार्च को भाजपा मध्य प्रदेश में सरकार बनाने की साजिश में कामयाब रही। इसके बाद निश्चिंत होकर सरकार ने लॉकडाउन की घोषणा की। लॉकडाउन करके उन्होंने अपनी जिम्मेवारी पूरी कर ली, मानो इतने से ही महामारी की रोकथाम हो जायेगी। विदेशों से आनेवालों की कोई जांच नहीं की गयी। लॉकडाउन क्षेत्रों में भी लोगों की जांच की कोई व्यवस्था नहीं की गयी। जांच के लिए आवश्यक किट पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध नहीं थे। आवश्यक संख्या में अस्पतालों और बिस्तरों का प्रबंध नहीं हुआ। आवश्यक संख्या में वेंटिलेटर नहीं थे। डॉक्टरों, नर्सों और स्वास्थ्य कर्मियों के लिए आवश्यक पीपीई के इंतजाम नहीं किये गये। दूसरी तरफ लॉकडाउन के नतीजतन करोड़ों मजदूरों को अपने काम से हाथ धोना पड़ा। गरीबों की रोजी-रोटी के उपाय बंद हो गये। प्रवासी मजदूरों के आशियाने और रोजगार छिन गये। उनका गुजर-बसर कैसे होगा, वे क्या खायेंगे–इसका कोई इंतजाम नहीं किया गया। प्रधानमंत्री और राज्यों के मुख्यमंत्री मीडिया में विभिन्न वायदों की घोषणा करने में मशगूल रहे, मानो लोगों की दुख-तकलीफें और बदहाली देखकर उनकी नींद हराम हो गयी हो। आनेवाले चुनावों के मद्देनजर वे यह साबित करने में व्यस्त हो गये कि वे लोगों के कितने उद्धारकर्ता हैं। प्रधानमंत्री ने इस बीच एक दिन देशभर में ताली-थाली और घंटियां बजाने और फिर एक दिन घर की सारी बत्तियां बुझाकर बाहर बालकॉनी में मोमबत्तियां, टॉर्च और मोबाइल फोन से रोशनी कर कोरोना भगाने की एक अजीब व्यवस्था की। मकसद था एक तरफ धार्मिक भावना को प्रोत्साहन देकर बढ़ाना, तो दूसरी तरफ अपनी पार्टी और सरकार के प्रति अंध भक्ति पैदा करना।

देश के ऐसे कठिन समय में हमेशा की तरह भाजपा मुसलमानों के खिलाफ नफरत फैलाना जारी रखे हुए है। तबलीगी जमात के कार्यक्रम को लेकर उन्हें एक अतिरिक्त अवसर मिल गया। धर्मांध मुसलमानों ने यह कार्यक्रम सरकारी अनुमति लेकर ही किया था। विदेशों से भी उनका आगमन सरकार की अनुमति से ही हुआ था। सरकार ने इस कार्यक्रम पर रोक लगाने संबंधी कोई निर्देश भी नहीं दिया था। यह सही है कि उनमें से कुछ लोग कोरोना रोग से संक्रमित पाये गये थे। लेकिन क्या उन्होंने इस बीमारी को फैलाने के लिए इस कार्यक्रम का आयोजन किया था? उन्होंने धार्मिक रूढ़िवादिता की वजह से ऐसा किया था, जैसे लगभग उसी समय तिरुपति में सरकारी अनुमति से ही बड़ा धार्मिक आयोजन किया गया था। अगर इसके लिए किसी को जिम्मेदार ठहराना ही है, तो जिस सरकार ने अनुमति दी थी, उस सरकार को ही जिम्मेदार ठहराया जाना चाहिए। लेकिन पूरे देश में यह जहर फैलाया जा रहा है कि मुसलमान ही इस बीमारी को ले आये हैं। एक ओर ऐसा इसलिए किया जा रहा है, ताकि आनेवाले दिनों में एनपीआर-एनआरसी को लागू करना आसान हो जाये, दूसरी ओर भले मानुष होने का दिखावा करते हुए प्रधानमंत्री और आरएसएस प्रमुख कह रहे हैं कि कोरोना के लिए किसी भी धर्म को जिम्मेदार नहीं ठहराना चाहिए। यह सब पाखंड भी चल रहा है।

यह सर्वविदित है कि जेएनयू के आंदोलनकारी छात्र-छात्राओं पर नकाबपोश गुण्डों ने हमला किया था-लेकिन वे कौन हैं? केन्द्र सरकार के तहत काम करनेवाली दिल्ली पुलिस एक को भी नहीं पकड़ पायी। कैसे पकड़ सकती है? पुलिस को पता है कि उन्हें किसकी शह मिली हुई है। यह भी दिन के उजाले की तरह स्पष्ट हो गया है कि किन लोगों ने शाहीनबाग आंदोलनकारियों को सबक सिखाने के लिए दिल्ली में दंगे करवाये। लेकिन इस कोरोना के हमले से जब देशवासी दिशाहीन हैं, उसी समय दंगा फैलाने का आरोप लगाते हुए एनआरसी-विरोधी आंदोलनकारियों को गिरफ्तार कर जेल में डाला जा रहा है। इस मामले में, हालांकि केन्द्र सरकार काफी सक्रिय है। इस कठिन समय में लोगों को केन्द्र और राज्य सरकारों, सत्ताधारी दलों और उनके संरक्षक पूंजीपतियों के असली चेहरे को पहचान लेने की जरूरत है।

इसलिए, यह भी समझना होगा कि चीन से महामारी ने फैलना शुरू किया। चीन ने शुरू में ही अपने देश में जैसा किया, अगर उसने विदेशों के मामले भी वैसा ही किया होता और अगर अन्य साम्राज्यवादी-पूंजीवादी देशों ने भी सावधानी बरतते हुए चीन के साथ सम्पर्क तोड़ लिया होता, तो उनके वाणिज्यिक लाभ के स्वार्थ को चोट तो अवश्य पहुंचती, लेकिन उन देशों में इस बीमारी का इतने बड़े पैमाने पर फैलाव नहीं हुआ होता और न ही इतने सारे लोगों की जानें जातीं। तो इसके लिए कौन जिम्मेदार है? इतने बड़े पैमाने पर लोगों के संक्रमित होने और इतनी भारी तादाद में हुई मौतों के लिए कौन जिम्मेदार है? इसके लिए भारत सहित पूरे विश्व के साम्राज्यवादी-पूंजीवादी देशों के कर्णधार जिम्मेदार हैं। क्योंकि इस पूंजीवादी व्यवस्था में आदमी की जिन्दगी की कोई कीमत नहीं है। पूंजीपतियों के लिए आदमी की एकमात्र कीमत श्रम शक्ति के तौर पर, पूंजीवादी शोषण-तंत्र के औजार के तौर पर है। इसलिए महान स्तालिन ने कहा था कि पूंजीपतियों के लिए मजदूर मानव-रूपी कच्चा माल हैं। जिस तरह फैक्ट्री चलाने के लिए कोयले की जरूरत होती है और कोयला जलकर राख हो जाता है, उसी तरह आदमी की श्रम शक्ति को भी पूंजीवाद इस्तेमाल करता है। उसका खून निचोड़ लेता है, हड्डी-पसली सबकुछ को चूरचूर कर मजदूरों के जीवन को राख बना देता है। यही वह आधार है, जिस पर पूंजीवादी शोषण-तंत्र चलता है। इसलिए उन्हें इस बात की चिंता नहीं है कि कौन बचा और कौन मरा।

इसलिए, इस घटना ने फिर दिखा दिया कि यह पूंजीवाद कितना क्रूर, निर्दयी और अमानवीय है। इसके साथ ही हम यह भी गौर कर रहे हैं कि वैज्ञानिक और पर्यावरणविद बार-बार चेतावनी दे रहे हैं कि ग्लोबल वार्मिंग बढ़ रही है, समुद्र का जल-स्तर बढ़ रहा है। अंटार्कटिका और आर्कटिक ध्रुवीय क्षेत्र में बर्फ पिघलती जा रही है। हिमालय के ग्लेशियर खत्म हो रहे हैं, जिसके फलस्वरूप नदियों के जल के स्रोत नष्ट हो रहे हैं। इन सबके परिणामस्वरूप पर्यावरण में बदलाव हो रहे हैं। यह मानव जाति के लिए खतरनाक है। पर्यावरणविदों ने बार-बार कहा है कि ग्रीनहाउस गैसों को नियंत्रित करें, जीवाश्म तेल का उपयोग कम करें। लेकिन कौन, किसकी बात सुनता है! अपने औद्योगिक लाभ के लिए, युद्ध उद्योग (War industry) के हितों को नियंत्रित करने के लिए कोई भी तैयार नहीं है। भले ही मानव सभ्यता खतरे में पड़ जाये, इससे उन्हें कोई एतराज नहीं। लेकिन उनके मुनाफे को ठेस नहीं पहुंचनी चाहिए। यही है साम्राज्यवाद-पूंजीवाद। इस महामारी के मामले में भी ऐन यही बात देखी गयी।

(शेष पृष्ठ 3 पर)

कॉमरेड प्रभास घोष का भाषण

(पृष्ठ 2 का शेष)

आंखें खोल देनेवाली जो एक और बात सामने आयी, वह है जन स्वास्थ्य के क्षेत्र में इन पूंजीवादी देशों की निर्मम लापरवाही। हर देश में देखा जा रहा है कि पर्याप्त संख्या में अस्पताल नहीं हैं। अस्पतालों में पर्याप्त संख्या में बेड नहीं हैं, डॉक्टर नहीं हैं, नर्स नहीं हैं, जांच किट नहीं हैं, वेंटिलेटर नहीं हैं, पर्सनल प्रोटेक्टिव इक्विपमेंट नहीं हैं। इस स्थिति से निपटने के लिए अगर पर्याप्त संख्या में अस्पताल होते, बेड होते, तो इतनी मौतें नहीं होतीं। यहां तक कि डॉक्टर और नर्स भी मर रहे हैं। इसका क्या कारण है? इसका कारण है कि हर देश में स्वास्थ्य बजट में कटौती की गयी है। तमाम साम्राज्यवादी-पूंजीवादी देश सैन्य बजट को महत्व देते हैं। पिछले साल सैन्य खर्च की बढ़ोतरी में अमेरिका पहले स्थान पर, चीन दूसरे स्थान पर और भारत तीसरे स्थान पर था। सभी साम्राज्यवादी-पूंजीवादी देश सैन्य उत्पादन में भारी वृद्धि कर रहे हैं। इस पर काफी खर्च कर रहे हैं। विज्ञान के मौलिक अनुसंधान में आवंटित राशि में कटौती की जा रही है। विज्ञान की मौलिक खोजों को बाधित किया जा रहा है। स्वास्थ्य के लिए आवश्यक स्वास्थ्य विज्ञान के चर्चा-अभ्यास को, उसके विकास को बाधित किया जा रहा है। अगर इस वैज्ञानिक अध्ययन-अभ्यास को इस तरह बाधित नहीं किया गया होता, तो शायद इस महामारी की दवा बहुत जल्दी खोजी जा सकती थी। इन सारी बातों की अवहेलना की गयी है। आजकल के बहुत से लोग नहीं जानते हैं कि रूस में समाजवादी क्रांति के बाद ही महान लेनिन के निर्देश पर सोवियत संघ के प्रतिनिधि ने लीग ऑफ नेशन्स में प्रस्ताव दिया था कि सभी राष्ट्र सैन्य उत्पादन पर रोक लगायें, युद्ध पर रोक लगे, सैन्य बजट की कोई जरूरत नहीं है, देश अपने सारे खर्च मानव कल्याण में करें। लेकिन कोई भी साम्राज्यवादी-पूंजीवादी देश इस पर सहमत नहीं हुआ। रवीन्द्रनाथ की 'रूस की चिट्ठी' में इस बात का जिक्र है। रवीन्द्रनाथ ने समाजवादी देश की इस भूमिका की तारीफ की थी।

वह सोवियत संघ आज प्रतिक्रांति से ढह चुका है। समाजवादी व्यवस्था के तहत बेरोजगारी का पूरी तरह सफाया कर उस देश ने सभी को काम का अवसर दिया था। जिस तरह वहां मुफ्त शिक्षा उच्चतम स्तर तक दी जाती थी, उसी तरह वहां सबके लिए मुफ्त इलाज की व्यवस्था लागू हुई थी। समाजवादी रूस में दुनिया में सबसे अधिक अस्पताल, बेड, डॉक्टर और नर्स थे। वहां 250 नागरिकों पर एक डॉक्टर था और 100 नागरिकों पर एक नर्स। जरा सोचिए, वे लोगों के स्वास्थ्य को किस नजर से देखते थे! किसी भी बीमार व्यक्ति का सोवियत संघ के किसी भी अस्पताल में मुफ्त इलाज होता था। वह देश विज्ञान और स्वास्थ्य विज्ञान के अध्ययन-अभ्यास के लिए भारी मात्रा में धन आवंटित करता था। अगर आज वहां समाजवाद मौजूद होता, अगर समाजवादी खेमा मौजूद होता, तो दुनिया के हालात कुछ और ही होते। स्वास्थ्य की उपेक्षा करने, इलाज की उपेक्षा करने के इस मामले में भी साम्राज्यवाद-पूंजीवाद जिम्मेदार है। जिसके परिणामस्वरूप, एक महामारी के प्रकोप से लाखों लोग मर रहे हैं। फिर देखिए, कोरोना से संक्रमित मरीजों की संख्या बढ़ती ही जा रही है, अस्पतालों में जगह नहीं है, कोई बेड नहीं है। नतीजतन, कैंसर, हृदय रोग, निमोनिया तथा डायलिसिस के मरीजों का कोई इलाज नहीं हो रहा है। परिणामस्वरूप, इन सब बीमारियों से भी अनेक लोग मर रहे हैं।

उसी समय एक और बात हुई। लॉकडाउन की वजह से सभी कल-कारखाने बंद हैं। दुनिया में और हमारे देश में करोड़ों मजदूरों का रोजगार चला गया है। इसके अलावा, बहुत सारे आम लोग, जो किसी तरह काम-धंधा करके गुजर-बसर किया करते थे, वे भी बेरोजगार हो गये हैं। इनमें से हजारों लोग भुखमरी से मर रहे हैं। केन्द्र और राज्य सरकारें मीडिया में बढ़-चढ़कर सरकारी राहत और विभिन्न योजनाओं की घोषणाएं कर रही हैं। लेकिन भूखे लोगों को नहीं पता कि राहत किसे मिल रही है? अगर आंकड़े जुटाये जायें, तो देखा जायेगा कि भुखमरी से होनेवाली मौतों की संख्या कोरोना बीमारी के कारण होनेवाली मौतों की संख्या से अधिक है। ऑक्सफैम के आंकड़ों के मुताबिक हमारे देश में प्रतिदिन 7,000 लोग भुखमरी से मरते हैं। पिछले साल वैश्विक भूख सूचकांक (Global Hunger Index) में 117 देशों में भारत 102वें स्थान पर था। भारत का शासक वर्ग गर्व महसूस कर सकता है। हालांकि, देश की कुल सम्पदा का 73 प्रतिशत देश के एक प्रतिशत अमीरों के पास है। इस कोरोना संकट के भयावह दौर में खबर आयी कि मुकेश अंबानी ने एशिया के सबसे अमीर व्यक्ति का स्थान प्राप्त कर लिया है। एक तरफ यह तरक्की है, तो दूसरी तरफ करोड़ों गरीबों, शोषितों, भूखे लोगों की हाहाकार!

प्रवासी मजदूरों के जीवन में कैसा भयानक संकट उत्पन्न हुआ है। हमारे देश में कई करोड़ प्रवासी मजदूर हैं। प्रवासी मजदूर शब्द हाल ही में आया है। गांव में रोजी-रोजगार नहीं है। पेट भरने के लिए लाखों गरीब गांवों से पलायन कर रहे हैं। वे कभी इस शहर, कभी उस शहर, कभी इस राज्य, कभी उस राज्य, तो कभी विदेशों की तरफ भाग रहे हैं। जहां भी किसी रोजगार का पता चलता है, वहीं वे दौड़े चले जाते हैं। उनकी नौकरी का स्थायित्व नहीं है। उनके काम की कोई समय सीमा नहीं है। उनकी न कोई निश्चित मजदूरी है और न ही निश्चित कोई आशियाना। सबकुछ मालिकों या ठेकेदारों के रहमो-करम पर है। ये नये प्रकार के मजदूर भी पूंजीवाद की देन हैं। लॉकडाउन से पहले किसी भी सरकार ने बिल्कुल ही नहीं सोचा कि उनका क्या हाल होगा। अगर उन्हें इनकी तनिक भी चिंता होती, तो वे इन्हें अपने घर भेजने का प्रबंध करते। जैसा कि हम मध्य-पूर्व में देखते हैं, सीरिया, फिलिस्तीन आदि में युद्ध की वजह से, लीबिया पर हमले की वजह से शरणार्थी यूरोप पहुंचने के लिए पागलों की तरह भूमध्य सागर की ओर भागे जा रहे हैं। रोहिंग्या म्यांमार में जुल्म का शिकार होकर, वहां से खदेड़े जाने पर पागलों की तरह भागते फिर रहे हैं। प्रवासी मजदूर भी उसी तरह पागलों की तरह मारे-मारे फिर रहे हैं। कई लोग जंगलों से होकर भागते फिर रहे हैं। उस दिन अखबारों में देखा कि सैकड़ों मील पैदल चलकर घर लौटने के क्रम में एक बच्ची की मौत हो गयी। खुले में सड़क से आने पर पुलिस-फौज मारेगी, इसलिए जंगल के बीच से गुजरते हुए रास्ते में ही उसकी मौत हो गयी। इन लोगों के रहने-खाने का कोई इंतजाम नहीं है। कुछ आश्रय गृह बनाये गये हैं, लेकिन वहां लोगों को हिटलर के यातना शिविरों जैसी हालत में रखा गया है। वहां शारीरिक दूरी का कोई सवाल ही नहीं है। न तो केन्द्र सरकार और न ही कोई राज्य सरकार किसी जिम्मेदारी को निभा रही है। यही है पूंजीवाद का चेहरा।

इस साम्राज्यवाद-पूंजीवाद के खिलाफ क्रांति की अपील करते हुए कॉमरेड शिवदास घोष ने मार्क्स, एंगेल्स, लेनिन, स्तालिन और माओ-त्से तुंग की शिक्षाओं के आधार पर भारत की धरती पर एसयूसीआई (कम्युनिस्ट) पार्टी की स्थापना की थी। इसलिए आज हमें सोचना होगा कि कॉमरेड शिवदास घोष की शिक्षाएं हमें क्या करने को कहती हैं।

आप जानते हैं कि पहले से ही दुनिया में मंदी चल रही थी। 'मंदी' की बजाय वे 'अर्थव्यवस्था का धीमा होना' (Slowing down of economy) कहा करते थे। लेकिन थी वास्तव में वह मंदी ही। पिछले साल ही हमारे देश में छोटे-बड़े 6 लाख 80 हजार कारखाने बंद हो गये थे और 10 करोड़ मजदूरों को नौकरी से निकाल दिया गया था। यह सरकारी आंकड़ा है। यही स्थिति अन्य देशों में थी। पता नहीं कब कोरोना का हमला रुकेगा। इसी दौरान यूरोप-अमेरिका में मांग उठी है, हमारे देश में भी उठ रही है–हम तो वैसे ही भूख से मर रहे हैं, इसलिए लॉकडाउन हटा लो। मालिक मुनाफे के लिए लॉकडाउन हटाना चाहते हैं, तो मजदूर और गरीब लोग अपने पेट की आग की वजह से।

जब इस बीमारी का हमला रुकेगा, तब हम एक नयी दुनिया देखेंगे। 1930 में साम्राज्यवादी-पूंजीवादी दुनिया में महामंदी आयी थी। उससे भी भयंकर मंदी आनेवाली है। अनगिनत फैक्ट्रियां बंद हो जायेंगी। करोड़ों मजदूर छंटनी के शिकार होंगे। भूख से करोड़ों लोगों की जानें जायेंगी। भूखे लोगों का तांता लग जायेगा। दुनिया भर में यही हालत है। यह एक पहलू है। एक और पहलू यह है कि शक्ति का संतुलन भी बदल जायेगा। अब तक अमेरिका दुनिया का नम्बर एक साम्राज्यवादी शक्ति था। दूसरा था जापान। लेकिन इस बीच चीन जापान की जगह ले चुका है और वह दूसरे नम्बर पर आ गया है। साम्राज्यवादी के तौर पर कौन कितना, कहां-कहां लूट के क्षेत्रों पर कब्जा करेगा, कौन कहां, कितना अपने वर्चस्व का विस्तार करेगा-इस बात को लेकर चीन और अमेरिका के बीच जोरदार व्यापार युद्ध (Trade war) चल रहा है। इसी वजह से इससे पहले दो विश्वयुद्ध हो चुके हैं। अब व्यापार युद्ध चल रहा है। कोई सशस्त्र हमला तो नहीं हो रहा है, लेकिन इससे कई कारखानें बंद हो रहे हैं, अनगिनत मजदूर नौकरी से हाथ धोकर भूखे मर रहे हैं। आम बोलचाल में एक कहावत है कि अगर हाथ से नहीं मार रहे हैं, तो भात से मार रहे हैं। कोरोना के बाद के दौर में चीन पहले से भी अधिक ताकत लेकर उभरेगा। इस दौरान चीन इस मौके का फायदा उठाकर यूरोप में कल-कारखाने खरीद रहा है, पूंजी निवेश कर रहा है। उसने भारत में भी कुछ शेयर खरीदा है, और भी शेयर खरीदने वाला है। इस तरह वह अपना वर्चस्व फैला रहा है। भारत सरकार ने एक कानून बनाया है, जिसके तहत सरकार की अनुमति के बगैर चीन भारत में कोई शेयर या फैक्ट्री नहीं खरीद सकता है। यूरोप के विभिन्न देशों ने भी घबराकर ऐसे ही निर्णय लिये हैं। लेकिन चीन धीरे-धीरे विभिन्न जगहों पर अपनी पकड़ बढ़ा रहा है। उसके विनिर्माण उद्योग (Manufacturing industry) बिना किसी नुकसान के बरकरार हैं। अन्य देशों में लॉकडाउन चल रहा है। चीन में अब लॉकडाउन नहीं है। नतीजतन, वह विनिर्माण क्षेत्र में बाजार को हड़पता जा रहा है। यहां तक कि उसने जो किट बेची, उसमें भी भ्रष्टाचार पाया गया। वह किट बेकार है, उससे काम नहीं हो रहा है। यूरोप ने उसे त्याग दिया है और भारत सरकार को भी ऐसा करने के लिए मजबूर होना पड़ा है। इसके बाद शायद देखने को मिले कि चीन सबसे बड़ा साम्राज्यवादी देश बन गया–जिसे अमेरिकी साम्राज्यवाद बिल्कुल भी नहीं होने देना चाहेगा। नतीजतन, इसे लेकर चीन और अमेरिका के बीच भयंकर लड़ाई होगी और यह कहना बड़ा मुश्किल है कि यह लड़ाई आखिर तक व्यापार युद्ध तक सीमित रहेगी। ट्रम्प अमेरिका में जल्द से जल्द लॉकडाउन हटाना चाहते हैं, क्योंकि अगर अमेरिका के उद्योग पिछड़ जाते हैं, तो चीन का वर्चस्व बढ़ेगा-यह उनकी चिंता है। यह भी उनका पूंजीवादी स्वार्थ है। इसका जनहित से कोई लेना-देना नहीं है। गौरतलब है कि सभी देश कोरोना बीमारी के प्रकोप से ग्रसित हैं। लेकिन साम्राज्यवादी-पूंजीवादी देशों के बीच आपस में एक दूसरे के साथ मुनाफे और व्यापारिक हितों को लेकर टकराव इतना प्रबल है कि वे इस महामारी के खिलाफ एकजुट नहीं हैं, सभी अपनी वैज्ञानिक शक्ति को एकजुट नहीं कर रहे हैं, मुसीबत में एक-दूसरे की मदद नहीं कर रहे हैं, यहां तक कि चिकित्सा-संबंधी सहायता के मामले में भी हिसाब

(शेष पृष्ठ 4 पर)

कॉमरेड प्रभास घोष का भाषण

(पृष्ठ 3 का शेष)

बैठा रहे हैं कि कौन, किसे ठगकर कितना मुनाफा कमा सकता है।

इसलिए देखा जा रहा है कि कोरोना के खिलाफ युद्ध में यूरोपीय संघ में भी कोई एकता नहीं है। ज्यादा प्रभावित इटली, स्पेन, फ्रांस चाहते हैं कि एकताबद्ध ढंग से इस महामारी का मुकाबला किया जाये, कोरोना को केन्द्रकर एक कोष तैयार किया जाये। लेकिन कम प्रभावित जर्मनी और नीदरलैंड इससे सहमत नहीं हैं। आज के अखबार में भी खबर है कि वे सर्वसम्मत किसी फैसले पर नहीं पहुंच पा रहे हैं। इस तरह पूंजीवादी स्वार्थों का टकराव चल रहा है। एक तरफ दुनिया में शक्ति का संतुलन बदलने जा रहा है। इसलिए टकराहटें और बढ़ेंगी। पूंजीवादी अर्थव्यवस्था की नींव भी डांवाडोल है। दूसरी तरफ इससे मजदूर वर्ग प्रभावित होगा। अमेरिका, यूरोप तथा हमारे देश में मजदूरों के अनेक अधिकार, जो द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद उन्होंने अपने संघर्ष के बल पर हासिल किये थे, उनमें से ज्यादातर पहले ही पूंजीपतियों ने छीन लिये हैं। जो थोड़े-बहुत बचे हुए हैं, उन्हें भी वे पूरी तरह से छीन लेंगे। थोड़े से मजदूरों से कम मजदूरी पर अधिक श्रम करवाया जायेगा। ऑटोमेशन, डिजिटलीकरण बड़े पैमाने पर चालू किया जायेगा। अर्थात् पूंजीवाद के मुनाफे के लिए बड़े पैमाने पर श्रम प्रधान (Labour intensive) उद्योगों की बजाय पूंजी प्रधान (Capital intensive) उद्योग चालू किये जायेंगे। काम के घण्टों की कोई सीमा नहीं रहेगी। निश्चित मजदूरी जैसी कोई चीज नहीं होगी। वे जब चाहेंगे, छंटनी कर देंगे, जब चाहेंगे कारखाने बंद कर देंगे।

एक और सवाल भी सामने आ रहा है कि इस संकट के दौर में पूंजीवादी अर्थव्यवस्था को कैसे टिकाये रखा जाये। इस संकटग्रस्त पूंजीवाद के बारे में फिलहाल बहुत कुछ लिखा जा रहा है। पूंजीवाद की हिफाजत में जो अर्थशास्त्री खड़े हैं, वे तरह-तरह के टोटके बतला रहे हैं। उनका एक तबका कीन्स के सिद्धांत की बात कर रहा है। 1930 में महामंदी के दौरान जब पूंजीवादी देशों में लोगों की क्रय शक्ति बिल्कुल नीचे गिर गयी थी, बाजार काफी सिकुड़ गया था, नतीजतन एक के बाद एक कारखाने में तालाबंदी हो रही थी, लोगों के पास रोजगार के कोई साधन नहीं थे, एकमात्र सोवियत समाजवाद को छोड़कर तमाम देशों में यह संकट पैदा हो गया था, तब बुर्जुआ अर्थशास्त्री कीन्स साहब ने बुर्जुआ देशों को अतिरिक्त नोट छापने की सलाह दी थी। उन्होंने कहा था कि अतिरिक्त नोट छापकर जनता में बांट दो, इससे जनता की क्रय शक्ति बढ़ जायेगी। यह कृत्रिम रूप से बढ़ाना है। इससे उल्टी दिशा से समस्या होती है। नोट छापने की एक नीति होती है। अगर उत्पादन 100 है, तो उसी मात्रा में नोट छापे जायेंगे। अगर उत्पादन 100 है और हमने 1000 नोट छाप लिये, तो मुद्रा की कीमत घट जाती है। इससे मुद्रास्फीति (Inflation) होती है, रुपये के मूल्य में काफी गिरावट आ जाती है, सामानों की कीमतें काफी बढ़ जाती हैं। उन्होंने यह भी कहा कि अगर रोजगार नहीं है, तो रोजगार पैदा करो। कुछ लोगों से मिट्टी कटवाकर गड्ढ़े खुदवाओ और फिर उस गड्ढ़े को कुछ लोगों से भरवाओ। मरणासन्न पूंजीवाद को बचाने के लिए ऐसे सुझाव अब फिर कुछ लोग दे रहे हैं। एक दूसरा तबका कह रहा है कि मालिकों का जो मुनाफा होगा, उसका एक हिस्सा राज्य ले ले और उसे मजदूरों में बांट दे। यह है मुनाफे को आपस में बांट लेना (Sharing of profit)। पूंजीवाद को बचाने के लिए आज ऐसे तरह-तरह के सिद्धांत आ रहे हैं। इनसे भी क्या आखिरकार वह बच पायेगा? पूंजीवाद को बचा पाना अब किसी के लिए भी संभव नहीं है। यह संकट पूंजीवाद का अनिवार्य परिणाम है। बहुत दिनों पहले महान मार्क्स ने दिखाया था कि मजदूरों को उचित देय मजदूरी से वंचित कर पूंजीपति मुनाफा कमाते हैं। एडम स्मिथ ने कहा था कि मजदूर सम्पदा के निर्माता हैं। महान मार्क्स ने पूछा था कि जिस मजदूर की श्रम शक्ति से सम्पदा पैदा हो रही है, वह मजदूर सम्पदा का मालिक क्यों नहीं होगा। उन्होंने दिखाया था कि पूंजी की निर्माता भी श्रम शक्ति ही है। मार्क्स ने बिल्कुल गणितीय ढंग से दिखाया था कि भुगतान नहीं की गयी मजदूरी (Unpaid labour) से मालिक का मुनाफा आ रहा है। इसलिए मजदूर अपने जायज हक से वंचित हो रहे हैं। और ये मजदूर ही तो बाजार के खरीदार हैं, इसलिए मजदूरी हमेशा उत्पादित माल की तुलना में कम होती है। और इसी के नतीजे के तौर पर पूंजीवादी अर्थव्यवस्था बाजार संकट पैदा करती है। मार्क्स ने उस समय कहा था कि मालिक मजदूर को उतनी ही मजदूरी देता है, जितनी मजदूरी देने से कोई मजदूर अपने परिवार के साथ किसी तरह जिन्दा रह सके। जिससे जरूरत आधारित मजदूरी (Need based wage) की बात आयी थी। आजकल वह भी लागू नहीं है। चूंकि उस समय मजदूरों की जरूरत थी, इसलिए मजदूरों की संतानों की भी जरूरत थी। उसी के आधार पर मजदूरी तय की जाती थी। अब अनगिनत बेरोजगार मजदूर उपलब्ध हैं। इसलिए आज जरूरत-आधारित मजदूरी जैसी कोई चीज भी नहीं है। बाद में महान लेनिन ने दिखाया था कि पूंजीवाद एकाधिकारी पूंजी के दौर में पहुंच गया है। उसने वित्तीय पूंजी को जन्म दे दिया है। यह साम्राज्यवाद और पतनशील पूंजीवाद के संकट का युग है। साम्राज्यवादी स्तर पर पूंजीवाद अपने देश में बाजार के सिकुड़ जाने के कारण पिछड़े देशों के सस्ते कच्चे माल और श्रम शक्ति को लूटने और उनके बाजार पर कब्जा करने के लिए औपनिवेशिक व अर्द्ध-औपनिवेशिक नीतियों का अनुसरण कर रहा है। लूट के बाजार पर कब्जा करने के लिए साम्राज्यवादी एक-दूसरे के खिलाफ युद्ध भड़का रहे हैं। स्तालिन ने द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद दिखाया था कि अधिकतम मुनाफे के लिए एकाधिकारी पूंजीपतियों के बीच प्रतिस्पर्धा चलती है। उन्हें अधिकतम मुनाफा चाहिए। इसके लिए उन्हें अधिकतम शोषण की जरूरत है। स्तालिन ने यह भी कहा था कि पहले बुर्जुआ अर्थव्यवस्था की जो सापेक्ष स्थिरता थी, वह अब नहीं रही। उन्होंने आगे कहा था कि उपभोक्ता उद्योगों (Consumer industries) का बाजार सिकुड़ रहा है, इसलिए पूंजीवाद की आवश्यकता से सैन्य उद्योगों (Military industries) का बाजार तैयार किया जा रहा है। इसे राज्य ही जनता के पैसे से खरीदेगा। और इसके लिए उन्हें युद्ध तनाव पैदा करने की जरूरत है, कभी-कभी युद्ध करवाने की जरूरत है, चाहे वे स्थानीय युद्ध हों या बड़े युद्ध। नतीजतन, यहां भी पूंजी निवेश की जायेगी। यही है अर्थव्यवस्था का सैन्यीकरण (Militarisation of economy)। इसके बाद कॉमरेड शिवदास घोष ने यह दिखाया था कि केवल इतना ही नहीं कि बुर्जुआ अर्थव्यवस्था ने सापेक्ष स्थायित्व खो दिया है, बल्कि पूंजीवाद अब सुबह-शाम के संकट की गिरफ्त में है। सुबह की स्थिति कुछ है, तो शाम की कुछ और। पूंजीवाद एक संकट से उबरने के क्रम में और भी गहरे संकट में डूबता जा रहा है। उन्होंने आगे कहा था कि सभी बड़े और छोटे साम्राज्यवादी-पूंजीवादी देशों ने अर्थव्यवस्था के सैन्यीकरण का रास्ता अपना लिया है। भारत में भी ऐसा ही है। अब तो हम हर घड़ी का संकट देख रहे हैं। शेयर बाजार लड़खड़ा रहा है। पूरी दुनिया में पूंजीवाद जबर्दस्त बाजार संकट के दौर से गुजर रहा है। मैं देख रहा हूं कि मल्टीनेशनल कॉरपोरेशन, ट्रांसनेशनल कॉरपोरेशन अपने राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था के हितों से भी ज्यादा अपने मुनाफाखोरी के हितों को महत्व दे रहे हैं। इसलिए वे सस्ते मजदूर और कच्चे माल का इस्तेमाल कर विदेशों में आउटसोर्सिंग करा रहे हैं। जबकि उन्हीं सामानों को वे अपने देश और अन्य जगहों पर ऊंचे दामों पर बेच रहे हैं। वे अपने देश की पूंजी और उद्योगों को दूसरे देशों में ले जा रहे हैं। भारत के पूंजीपति भी विदेशों में पूंजी निवेश कर रहे हैं, कारखानें और खदान खरीद रहे हैं। उनका राष्ट्रीय हित इतना ही है, जितना कि वे राष्ट्रीय राज्य का इस्तेमाल कर सकें। इसलिए उनके व्यक्तिगत हित के साथ राज्य के समग्र हित का टकराव पैदा हो रहा है, जिसकी वजह से अमेरिकी राष्ट्रपति देख रहे हैं कि देश में बेरोजगारी तेजी से बढ़ रही है। नतीजतन, विदेशों में आउटसोर्सिंग पर रोक लगाने तथा अपने देश में पूंजी निवेश करने के लिए वे उन पर दबाव बना रहे हैं। वे धमकी दे रहे हैं कि अगर ऐसा नहीं किया, तो राज्य सभी सुविधाओं पर रोक लगा देगा। अमेरिकी पूंजीवादी अर्थव्यवस्था को बचाने के लिए ही ऐसा किया जा रहा है। क्योंकि किसी भी समय, 'ऑक्युपाई वॉल स्ट्रीट' आंदोलन फिर से उठ खड़ा हो सकता है, देश में ऐसी ही विस्फोटक स्थिति मौजूद है। इसकी वजह से भूमण्डलीकरण का पैरोकार होने के बावजूद आज उसके अपने देश की अर्थव्यवस्था संकट में होने के कारण वह खुद ही भूमण्डलीकरण का विरोध कर रहा है। उसने घोषणा की है कि अमेरिकी हित पहले (American interest first) देखना होगा।

ऐसी स्थिति में आनेवाले दिनों में 1930 की मंदी से भी भयंकर मंदी आनेवाली है। संयुक्त राष्ट्र संघ के विश्व खाद्य निदेशक (World Food Director) ने इस दौरान भूख महामारी आने की चेतावनी दी है। उनके अनुमान के मुताबिक पहले से ही दुनिया में लगभग 100 करोड़ लोग रोज भूखे रहते हैं। यह संख्या और भी कई गुना बढ़ जायेगी। दुनिया के बाकी हिस्सों के साथ-साथ हमारे देश में करोड़ों बेरोजगार, भूखे लोग नजर आयेंगे। विडम्बना यह है कि दुनिया में कोई ताकतवर कम्युनिस्ट पार्टी नहीं है, जो आज पूंजीवाद के खिलाफ लड़ सके। भारत में भी, हम अकेले संघर्ष करने की स्थिति में नहीं हैं। हम ऐसे हालात से रूबरू हैं। कोरोना के प्रकोप से पहले हमारी पार्टी के कार्यकर्ता विभिन्न राज्यों में एनआरसी के खिलाफ आंदोलन में लगे हुए थे। इस आंदोलन में केवल हमारी पार्टी ही अपनी पूरी ताकत के साथ शामिल थी। यह आंदोलन व्यापक रूप लेता जा रहा था। अल्पसंख्यक समुदाय के लोग जीवन-मरण की आर-पार की लड़ाई में आगे तो आये ही थे, बहुसंख्यक समुदाय के लोगों का परोक्ष समर्थन भी इस आंदोलन में था। इसी समय अचानक कोरोना का प्रकोप शुरू हुआ।

कोरोना का प्रकोप शुरू होने के बाद हमने पार्टी की ओर से सभी कार्यकर्ताओं को सूचित किया कि वे स्वयं को कोरोना के प्रकोप से बचाने के लिए मेडिकल नियमों का पालन करें। दूसरे समय में कॉमरेड दिन भर अन्य गतिविधियों में व्यस्त रहते थे। इसलिए, अध्ययन पर जितना जोर देना आवश्यक है, उतना नहीं दे पाते थे। हालांकि, मेरा मानना है कि काम का दबाव चाहे जितना भी क्यों न हो, हर कॉमरेड को अपने रोजमर्रे के काम के अंग के रूप में काफी महत्व देकर अध्ययन करना चाहिए। यह लेनिन, स्तालिन, माओ त्से-तुंग तथा कॉमरेड शिवदास घोष की ही शिक्षा है। इस दौरान कॉमरेडों को अध्ययन करने का काफी मौका मिला है। उन्हें अध्ययन करने के लिए कहा गया है। कामरेडों ने ऐसा हर जगह किया है। कॉमरेडों को एक और बात कही गयी है। जो लोग विभिन्न सेंटरों में, कार्यालयों में एक साथ रहते हैं, वे दूसरे समय काम से पूरे दिन बाहर ही रहते हैं। अब हमें सारे समय साथ रहना पड़ रहा है। इसलिए, इस दौरान आपसी समझ को बेहतर बनाने के लिए सतत् सामूहिक साहचर्य (Constatnt common associa-

(शेष पृष्ठ 5 पर)

कॉमरेड प्रभास घोष का भाषण

(पृष्ठ 4 का शेष)

tion), सतत् सामूहिक चर्चा-बहस (Constatnt common discussion) आदि के जरिये सामूहिक जीवन (Collective life) को बेहतर बनाने का पर्याप्त अवसर है। कॉमरेड उस अवसर का लाभ उठायें। इसके अलावा, मीडिया में केन्द्र और राज्य सरकारों द्वारा जिन तमाम राहतों की घोषणाएं की जा रही हैं, वे गरीबों को मिलें, इसके लिए अधिकारियों पर दबाव बनाने, मांग उठाने का निर्देश भी कॉमरेडों को दिया गया है। इसके साथ ही यह भी कहा गया है कि इस दौरान कॉमरेड अपने-अपने इलाके में यथासंभव राहत सामग्री वितरित करें। हमारे कॉमरेड संवेदनशील हैं। लोगों की समस्याएं देखकर वे छटपटा रहे हैं। वे पहले से अधिक पहलकदमी के साथ बार-बार राहत कार्य में कूद पड़ना चाहते हैं। इस स्थिति में उन्होंने यथासंभव किया और अभी भी कर रहे हैं। इसके अलावा, कई प्रांतों ने प्रवासी मजदूरों के लिए अपनी प्रांतीय सरकारों पर दबाव डालकर कई मांगें हासिल की है। साथ ही उन्होंने कुछ खाद्य पदार्थों का भी वितरण किया है।

आनेवाले दिनों में जो जरूरतें हमारे सामने पेश आने वाली हैं, भारत की सरजमीं पर और दुनिया में उन जरूरतों के बारे में हमें गहराई से सोचने की आवश्यकता है ताकि हम कॉमरेड शिवदास घोष की शिक्षाओं के आधार पर यथोचित भूमिका निभा सकें। पहली बात यह कि जिन क्षेत्रों में लॉकडाउन हटाया जा रहा है, वहां कार्यकर्ताओं को मेडिकल सुरक्षा व ऐहतियात बरतते हुए यथासंभव राहत कार्य में खुद को झोंक देना होगा। लेकिन कॉमरेडों को इस बात का ध्यान रखना होगा कि यह समझने का कोई उपाय नहीं है कि कौन कोरोना वायरस से संक्रमित है और कौन नहीं। इसलिए, तमाम ऐहतियात बरतते हुए वे उन जगहों पर राहत कार्य में लग जायेंगे। और जब लॉकडाउन पूरी तरह से हटा लिया जायेगा, तब हम अपनी पूरी ताकत लगाकर राहत सामग्री इकट्ठा करने और वितरित करने के काम में लग जायेंगे। यह काम पार्टी के नाम पर, जन संगठनों के नाम पर और विभिन्न मंचों के नाम पर करना होगा। इससे पहले हमने विभिन्न मंचों के माध्यम से कई प्रतिष्ठित व्यक्तियों और बुद्धिजीवियों से संपर्क स्थापित किया है, हम राहत सामग्री संग्रह और वितरण के काम में भी उन्हें शामिल करेंगे। अगर हमें जन कमिटी बनानी पड़ी, तो हम जन कमिटी बनायेंगे। ऐसा करने में यदि दूसरी पार्टियों के लोग दिलचस्पी दिखाते हैं, तो हम उन्हें भी इस काम में शामिल करेंगे। हमारी पार्टी के हर स्तर पर सदस्यों के अलावा, हम जन संगठनों के आम सदस्यों, पार्टी के समर्थकों, कार्यकर्ताओं के दोस्तों, रिश्तेदारों, एक समय पार्टी का काम करते थे अब नहीं कर पाते हैं, ऐसे लोगों, इस काम में दिलचस्पी लेने वाले आम लोगों- सभी को हम इस काम में शामिल करेंगे। देश-विदेश से जैसा भी हो, जैसा भी संपर्क हो, हम उनका इस्तेमाल राहत सामग्री संग्रह करने और वितरित करने के काम में करेंगे। हमें इसे सर्वाधिक महत्व के साथ करना है। जहां झंडा लेकर काम किया जा सकता है, करेंगे। जहां ऐसा नहीं किया जा सकता है, हम बिना झंडे के ही काम करेंगे। जहां जरूरत होगी, वहां जन कमिटी बनाकर करेंगे। मुझे पता है कि हमारी पार्टी के कार्यकर्ताओं के मानवीय मूल्यबोध उन्नत स्तर के हैं। वे इस काम में अवश्य ही पहलकदमी लेंगे। दूसरी तरफ, बड़े पैमाने पर राहत प्रदान करने के लिए सरकार के खिलाफ आंदोलन शुरू करने की जरूरत है। इसके अलावा, समग्र रूप से हमारी पार्टी, पार्टी के विभिन्न वर्ग संगठनों, जन संगठनों और मंचों को जनता की विभिन्न मांगों पर आंदोलन करने के लिए तैयार रहना होगा। भोजन की मांग पर भूखे लोगों, नौकरी की मांग पर छंटनीग्रस्त मजदूरों, बेरोजगार युवाओं, घोर संकट में फंसे खेत मजदूरों, गरीब और मझोले किसानों, प्रवासी मजदूरों, छोटे व्यवसायियों, दुकानदारों–हर तबके के दुर्दशाग्रस्त लोगों का जगह-जगह सहज स्वत:स्फूर्त आक्रोश सड़कों पर फूट पड़ेगा, उग्र प्रदर्शन होंगे, विरोध के शोले भड़क उठेंगे– इनमें जन कमिटियां बनाकर हमें एक सुसंगत, संगठित, अनुशासित आंदोलन को रूप-आकार देने में अग्रणी भूमिका निभानी होगी। जहां भी जैसी संभावना दिखाई दे, कॉमरेड पहल करें, उच्च नेतृत्व के दिशानिर्देश का इंतजार न करें। अगर दूसरी कोई पार्टी भी कहीं जनता की जायज मांगों पर आंदोलन का निर्माण करती है, तो हम उसमें भी शामिल होंगे, बिना बुलाये भी हम वहां जायेंगे। यह एक आपातकालीन दौर है। हम आंदोलन चाहते हैं, जो जितनी दूर तक आंदोलन के लिए तैयार हैं, हम उन्हें साथ लेकर आंदोलन करेंगे। लेकिन हमें पहल करनी होगी। हमें इसे समझने की जरूरत है। मजदूर, किसान, छात्र, नौजवान, महिला संगठन तथा विभिन्न पेशों के संगठन–सभी तैयार रहें ताकि हम जनता की मांगों को लेकर आंदोलन का निर्माण कर सकें और लोगों पर होनेवाले हमलों का डटकर मुकाबला कर सकें।

एक और बात मैं यहां कहना चाहूंगा। बुर्जुआ शासक वर्ग लोकतंत्र के जिन बचे-खुचे अवशेषों को आज मौखिक रूप से ही सही, बरकरार रखे हुए है, आनेवाले दिनों में लोकतंत्र के उन बचे-खुचे अवशेषों का लेशमात्र भी नहीं रहेगा। पहले से अधिक खुलेआम फासीवादी हमले होंगे। विक्षोभ प्रदर्शनों को दबाने में सरकार और क्रूर भूमिका अदा करेगी। इसके लिए हमें तैयार रहना होगा। पहले से अधिक काले कानून आयेंगे-इसके लिए तैयार रहना होगा। दुनिया में उग्र-राष्ट्रवाद, नस्लवाद, साम्प्रदायिक बैरभाव तथा हमारे देश में क्षेत्रीयता, धार्मिक कट्टरता, जात-पांत व आदिवासी-गैर आदिवासी समुदायों के बीच जो टकराहटें मौजूद हैं, जनता की एकता को तोड़ने के लिए पूंजीपति उन्हें जोरदार ढंग से बढ़ावा देंगे। हमें इन सबके खिलाफ लड़ना होगा और उसके लिए हमें तैयार रहना होगा।

साथ ही आज की इस छोटी-सी बैठक में कुछ कॉमरेडों ने मुझे कुछ मुद्दों पर चर्चा करने का आग्रह किया है। वैचारिक चर्चा-बहस पर हमारी पार्टी काफी जोर दे रही है, इसकी एक खास वजह है। पहली बात यह है कि हम सभी एक पूंजीवादी समाज से आये हैं। हमने बचपन में जो कुछ सीखा है, एक अध:पतित सड़ी-गली बुर्जुआ सामाजिक व्यवस्था के साथ सामंतवाद का प्रभाव, हमारे दृष्टिकोण, हमारी विचारधारा, हमारी सोच की दुनिया, हमारे दुख-दर्द के अहसास, हमारी इच्छाएं, तमन्नाएं, हमारे स्नेह-प्रेम-प्यार, हमारे क्रोध-अभिमान– सब कुछ इसके आधार पर ही निर्मित हुआ है। ये हमारी आदतों की ताकतें हैं। आदत की ताकत बहुत शक्तिशाली होती है। वह तर्क से भी ज्यादा शक्तिशाली होती है। ऐसा देखा जाता है कि जिसे हम बुद्धि से सही मानते हैं, उसे अनेक मौकों पर मन नहीं मानना चाहता। क्योंकि लम्बे समय तक अमल में लाने से, अभ्यस्त हो जाने से रग-रग में समायी हुई आदत मननशक्ति को प्रबल रूप से बाधा देती है। इसलिए तर्क के साथ मन का जबर्दस्त द्वन्द्व दिखाई देता है। तर्क से प्रभावित मन और लम्बे अर्से से बनी आदतों वाले मन का जबर्दस्त टकराव होता है। जिसकी वजह से कुछ लोग बहुत दुख के साथ कहते हैं, मैं समझता तो हूं, लेकिन नहीं कर सकता। मैं अपने आपसे खुद ही हार गया। अत: कम्युनिस्ट बनने का संघर्ष बहुत ही कठिन संघर्ष है। आज के समय में तो यह और भी कठिन है। मार्क्स-एंगेल्स के समय का संघर्ष, लेनिन-स्तालिन-माओ त्से-तुंग के समय का संघर्ष और आज का संघर्ष एक नहीं है–इस बात को कॉमरेड शिवदास घोष समझ पाये थे। आपको कॉमरेड शिवदास घोष के हर भाषण में नीति-नैतिकता की बात, चरित्र की बात मिलेगी–इन बातों पर उन्होंने काफी जोर दिया है। मार्क्स-एंगेल्स या लेनिन-स्तालिन-माओ त्से-तुंग को इन मुद्दों पर इतना जोर देने की जरूरत नहीं पड़ी। कॉमरेड शिवदास घोष ने कहा था कि धर्म ने एक समय प्रगतिशील भूमिका निभायी थी और धार्मिक मूल्यबोधों पर आधारित उन्नत चरित्रों की पैदाइश हुई थी। यह मूल्यबोध सामंती जमाने में ही खत्म हो गया था। पूंजीवाद के शुरुआती दौर में इसका मामूली-सा अवशेष बचा हुआ था। फिर, शुरुआती दौर में सामंतवाद के खिलाफ निजी संपत्ति के मालिकाने के हक की मांग प्रगतिशील थी। इन सब का आगमन निजी पूंजीवादी स्वामित्व के अधिकारों को हासिल करने के स्वार्थ में हुआ था। मनुष्य ईश्वर की सृष्टि नहीं, बल्कि पार्थिव जगत की रचना है। ईश्वर जैसी कोई चीज नहीं है। ईश्वर के विधि-विधान नाम की कोई चीज नहीं चल सकती। इसलिए, राजाओं और सामंती मालिकों को ईश्वर के प्रतिनिधि के तौर पर मान्यता देना हरगिज मंजूर नहीं है। राजा नहीं, बल्कि प्रजा ही तय करेगी कि शासन कैसे चलेगा। जनता की चुनी हुई सरकार शासन करेगी। उसमें भी चुनावों के जरिये बदलाव होगा। धर्मशास्त्र नहीं, बल्कि जो तर्कसंगत है, वही सत्य है। इन सब को लेकर बुर्जुआ मानवतावादी दृष्टिकोण आया था।

शुरू में निजी स्वामित्व का एक सामाजिक पहलू था। समाज के उत्पादन की प्रगति के लिए ही कुटीर उद्योगों को बड़े पैमाने के उद्योगों में तब्दील करना आवश्यक था। निजी स्वामित्व तब प्रगतिशील था। उस जमाने का नारा था: सामाजिक हित प्रधान है, व्यक्तिगत हित गौण। लेकिन जब इतिहास के पथ पर आगे चलकर पूंजीवाद प्रतिक्रियावादी हो गया, व्यक्तिवाद प्रतिक्रियावादी हो गया, तब व्यक्तिगत हित प्रधान और एकमात्र हित हो गया। व्यक्ति घोर आत्म-केन्द्रित हो गया। वह सामाजिक मामलों में गैर जिम्मेदार बन गया। पूंजीवाद का मुख्य लक्ष्य ही है येन-केन-प्रकारेण मुनाफा कमाना। यहां कोई अन्य प्रश्न नहीं है। वैसा ही व्यक्ति के मामले में भी हो गया, जैसे भी हो, मेरा हित सधना चाहिए। यहां कोई सामाजिक जिम्मेदारी नहीं है। यहां तक कि पारिवारिक जिम्मेदारी भी लगभग खत्म होने को है। और अगर कोई सामाजिक जिम्मेदारी नहीं रहे, तो कोई मूल्यबोध भी नहीं रहता है। कोई भी मूल्यबोध सामाजिक जिम्मेदारी के आधार पर, सामाजिक हितों के आधार पर निर्मित होता है। अत: मानवीय मूल्यबोध भी लगभग समाप्त होने को हैं। यह जो बेबस वृद्ध माता-पिता की जिम्मेदारी औलाद नहीं ले रही है, गरीब भाई-बहनों की बात तो दूर रही, पति-पत्नी के वैवाहिक जीवन में निरंतर कलह, आपसी संदेह और अविश्वास, जब-तब रिश्ते टूट जाना, युवाओं के अनैतिक बेपरवाह आचरण, घोर नैतिक अध:पतन, सेक्स को लेकर अंधाधुंध व्यभिचार–यह सबकुछ हो रहा है समाज में किसी तरह के मूल्यबोध काम न करने की वजह से।

जब लेनिन रूस में क्रांति कर रहे थे, तब वहां सामंतवाद का प्रभाव था। वहां धार्मिक मूल्यों के कुछ अवशेष विद्यमान थे और सापेक्ष तौर पर बुर्जुआ मानवतावाद की प्रगतिशील भूमिका भी थी। क्योंकि वहां पूंजीवाद का आगमन हाल फिलहाल हुआ था। चीनी क्रांति के दौरान पूंजीवाद लगभग लघु उद्योग के स्तर पर था। वहां भी धार्मिक मूल्यों का कुछ प्रभाव था और बुर्जुआ मानवतावादी मूल्यों की प्रगतिशील भूमिका थी। जबकि कॉमरेड शिवदास घोष ने भारत में प्रतिक्रियावादी पूंजीवाद के स्तर पर मजदूर वर्ग की क्रांतिकारी पार्टी का निर्माण किया है। इसलिए उन्होंने कहा था कि धार्मिक मूल्यबोध खत्म हो चुके हैं और मानवीय मूल्यबोध भी लगभग खत्म होने को हैं। नतीजतन अन्य विकसित पूंजीवादी देशों की तरह मूल्यबोधों के क्षेत्र में एक शून्यता व्याप्त है। दूसरी तरफ सर्वहारा नैतिकता का प्रभाव

(शेष पृष्ठ 6 पर)

कॉमरेड प्रभास घोष का भाषण

(पृष्ठ 5 का शेष)

समाज में नहीं फैला है। उन्होंने कहा था कि यहीं से सांस्कृतिक संकट, नीति-नैतिकता का संकट आया है। और हम उसकी उपज हैं। हम में से जो लोग इस पार्टी में शामिल हो रहे हैं, उन्हें यह बात अच्छी तरह से समझनी होगी। यही वजह है कि उन्होंने अपने लगभग सभी भाषणों में मूल्यबोध पर, नैतिकता पर इतना जोर दिया है। यह आवश्यकता रूसी और चीनी क्रांति के दौरान महसूस नहीं की गयी थी। वहां काफी हद तक हमारे देश में आजादी आंदोलन के दौर की तरह बुर्जुआ मानवतावादी मूल्यों और व्यक्तिवाद ने सापेक्ष अर्थों में क्रांति के पक्ष में काम किया। लेकिन क्रांति के बाद के दौर में समाजवाद की प्रगति और स्थिरता हासिल करने की अवधि में इसी व्यक्तिवाद ने समाजवादी व्यक्तिवाद के रूप में सूक्ष्म ढंग से ताकत बटोर ली। इसे समझने में नेतृत्व विफल रहा और समय रहते इसके खिलाफ वैचारिक और सांस्कृतिक संघर्ष नहीं किया। वह व्यक्ति को व्यक्तिवाद से मुक्तकर सामाजिक हितों के साथ एकाकार करने की आवश्यकता का अहसास नहीं कर सका। इस समाजवादी व्यक्तिवाद ने ही बाद में प्रतिक्रांति की एक प्रमुख ताकत के रूप में काम किया। ये सारी बातें हम कॉमरेड शिवदास घोष के अमूल्य विश्लेषण से जानते हैं। सर्वहारा नैतिकता का स्वरूप क्या होगा– इसका विश्लेषण कर उन्होंने दिखाया था कि नैतिकता केवल निजी संपत्ति से मुक्त होना ही नहीं है, बल्कि निरंतर संघर्ष चलाते हुए जीवन के सभी क्षेत्रों में निजी संपत्ति जनित मानसिकता और संस्कृति से मुक्त होकर सर्वहारा क्रांति और सर्वहारा पार्टी के साथ एकात्मता कायम करने का संघर्ष है। इसलिए, उन्होंने इस बात पर बहुत ही जोर देकर कहा था कि मार्क्सवाद का सार उन्नत नैतिकता में निहित है। उन्होंने यह भी कहा था कि अगर मार्क्सवाद ने उन्नततर नैतिकता की जानकारी न दी होती, तो मैं मार्क्सवाद को नहीं अपनाता। याद रहे कि कम्युनिस्ट नैतिकता हासिल करने, मूल्यबोध हासिल करने का संघर्ष बहुत कठिन संघर्ष है। अगर हममें कोई मूल्यबोध अर्थात् धार्मिक मूल्यबोध या बुर्जुआ मानवतावाद काम करता, तो तर्क के द्वारा उससे मुक्त होकर सर्वहारा मूल्यबोध हासिल करना अपेक्षाकृत आसान होता। लेकिन जब हममें कोई मूल्यबोध ही नहीं है, मूल्यबोध की कार्यकारिता की जरूरत का कोई अहसास ही नहीं है, तो ऐसे में सर्वहारा मूल्यबोध हासिल करना बड़ा कठिन है। इसीलिए उन्होंने बार-बार कहा था है कि पहले हमें पुनर्जागरण और आजादी आंदोलन के दौर से, खासकर उस दौर की गैर समझौतावादी धारा से मानवतावादी मूल्यबोधों को हासिल करना होगा। उसके बाद हमें वर्ग-संघर्ष के रास्ते उस स्तर को पार कर सर्वहारा संस्कृति हासिल करनी होगी। इसलिए इस संस्कृति को हासिल करने के लिए हमें कठिन संघर्ष चलाना होगा, निरंतर संघर्ष चलाना होगा।

फिर उन्होंने दिखाया था कि अगर हम सतर्कता बरतते हुए निरंतर संघर्ष न करें, तो परिवेश के हमले से एक समय हासिल किये हुए उन्नत स्तर में गिरावट आ जाती है। और यह संघर्ष हमें अपने खुद के साथ करना होता है। हम जिस तरह तर्क से, थोड़े-बहुत जज्बात से मार्क्सवाद-लेनिनवाद-कॉमरेड शिवदास घोष विचार को अपना रहे हैं, उसी तरह हमारा वर्ग दुश्मन हमारे अंदर हमारी अस्थि-मज्जा में घुसा हुआ है। और बाहरी वर्ग-दुश्मन भी काफी ताकतवर है। कॉमरेड शिवदास घोष ने दिखाया था कि इस परिवेश में बचपन से हमारा मन, हमारा दृष्टिकोण, हमारा आचार-विचार और हमारी आदतें विकसित हुई हैं। तो क्या हमारे अंदर जो नजरिया है, जो विचार है, जो आशा-आकांक्षा है, जो पसंद-नापसंद है–क्या वह सबकुछ मजदूर वर्ग की क्रांति के हित में है, क्या वह मार्क्सवाद-लेनिनवाद-कॉमरेड शिवदास घोष विचार के अनुरूप है? हमारे इस दु:ख, इस खुशी, इस प्यार, इस गुस्से, इस अभिमान का वर्ग चरित्र क्या है? इनका भी तो वर्ग चरित्र है। हम इसे कैसे समझेंगे? यह दृष्टिकोण हमें कहां से प्राप्त होगा? अगर यह दृष्टिकोण प्राप्त करना है, तो हमें कॉमरेड शिवदास घोष की शिक्षाओं को पढ़ना होगा, जानना होगा। पहले तो इसे पढ़ना है, लेकिन सिर्फ पढ़ने से ही काम नहीं चलेगा, उसे हृदयंगम करना होगा, क्योंकि जानना और अहसास करना एक बात नहीं है। (To know and to realise are different things) कॉमरेड शिवदास घोष ने कहा था कि जो पढ़ना जानता है, अंग्रेजी जानता है, वह कुछ महीनों में मार्क्सवाद की सभी पुस्तकों को जुबानी याद कर सकता है, विद्वान बन सकता है। दूसरे इंटरनेशनल के नेताओं में गिरावट क्यों आयी? लेनिन काउत्स्की और प्लेखानोव के ही तो छात्र थे। ट्रॉट्स्की, जेनावियेव, कामेनेव या ली शाओ ची, तेंग शियाओ पिंग–क्या ये लोग दुश्मन के एजेंट के रूप में पार्टी में शामिल हुए थे? कॉमरेड शिवदास घोष का कहना है कि बात ऐसी नहीं थी। दरअसल वे जीवन में मार्क्सवाद को लागू नहीं कर सके। कॉमरेड शिवदास घोष ने एम एन राय की मिसाल देकर चर्चा की है। आजकल के हमारे कई लोग एम एन राय के बारे में ज्यादा नहीं जानते हैं। एक समय भारत में एम एन राय एक नामचीन बुद्धिजीवी थे। वे मार्क्सवाद के प्रति आकर्षित हुए थे। लेनिन ने उन्हें भारत में कम्युनिस्ट पार्टी बनाने का काम सौंपा था। वही एम एन राय घोर मार्क्सवाद-विरोधी हो गये थे। कॉमरेड शिवदास घोष ने दिखाया था कि उन्होंने ज्ञान-विज्ञान की बहुत सारी किताबें पढ़ी हुई थी, लेकिन वे द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद नहीं समझ पाये, इसे वे द्वन्द्वात्मक तरीके से संयोजित नहीं कर पाये। नतीजतन, उनकी सोच, उनकी आदतें, उनके आचरण-व्यवहार मार्क्सवाद-लेनिनवाद से मेल खाते हुए थे या नहीं, क्रांति के परिपूरक थे या नहीं–इन बातों पर विचार कर वे क्रांति और क्रांतिकारी पार्टी के साथ एकात्म नहीं हो पाये। यहीं उनकी विफलता रही।

इसलिए, कॉमरेड शिवदास घोष ने बार-बार कहा था कि उन्नत चरित्र हासिल किये बिना आप कभी क्रांतिकारी सिद्धांत भी नहीं समझेंगे। और अगर उन्नत चरित्र हासिल करना है, तो व्यक्तिवाद के जो विभिन्न रूप हैं, उनसे खुद को मुक्त करना होगा। विभिन्न रूपों में व्यक्तिवाद के जो हमले हो रहे हैं, बुर्जुआ विचारों के हमले हो रहे हैं– इनके साथ सर्वहारा रुचि-संस्कृति, सर्वहारा दृष्टिकोण का अंतर कहां है, इस बात को हमें समझना होगा। हम पर जो बुर्जुआ हमले हो रहे हैं, ये सारे विचार बुर्जुआ संस्कृति, व्यक्तिवादी रुझान तथा व्यक्तिगत स्वार्थ की ही उपज हैं–इन बातों को समझ पाना और समझकर उनसे छुटकारा पाने का संघर्ष चलाना होगा। अगर आप इनसे मुक्त नहीं हो सके, तो बातें केवल लफ्फाजी बनकर रह जायेंगी, उनमें कोई जान नहीं रहेगी। वे जीवंत नहीं होंगी। आप भी चरित्र हासिल नहीं कर पायेंगे, दूसरों को भी चरित्र हासिल करने में मदद नहीं कर पायेंगे। जीवन ही नये जीवन को जन्म देता है, जीवन्त चरित्र ही दूसरों को जीवन्त चरित्र हासिल करने के लिए प्रेरित करता है। इसलिए उन्होंने कहा था कि सिर्फ पढ़ने से ही काम नहीं चलेगा, सिर्फ काम करने से ही बात नहीं बनेगी। आपको दोनों को द्वन्द्वात्मक प्रक्रिया से संयोजित करना होगा और संयोजन के जरिये जब आप उन्नत संस्कृति हासिल कर लेंगे, केवल तभी आप सिद्धांत का विचार-विश्लेषण कर पायेंगे। इसलिए वे संस्कृति पर काफी जोर दिया करते थे। कॉमरेडों को यह बात समझनी होगी।

अतएव पढ़ने का एक पहलू यह है कि पूंजीवाद क्या है, समाजवाद क्या है, सर्वहारा क्रांति कैसे करनी होगी, संगठन कैसे बनाया जाये, मजदूरो की समस्याएं क्या हैं, किसानों की समस्याएं क्या हैं, पूंजीपति किस तरह हमले कर रहे हैं, साम्राज्यवाद क्या है–यह सब जानना। यह एक पहलू है। दूसरा पहलू यह है कि द्वन्द्वात्मक विचारधारा, जिसे चिंतन या सोच की एक प्रक्रिया (one process of thinking) कहते हैं, उस प्रक्रिया से सोचने की योग्यता हासिल करनी होगी। क्यों सच्चाई को जानने के लिए मार्क्सवाद जानना जरूरी है? मार्क्सवाद के साथ भाववाद का क्या फर्क है? भले ही यह मौलिक रूप से एक हो, फिर भी हमारे देश में भाववाद का विशेष विश्लेषण क्या-क्या है? इन सब के खिलाफ मार्क्सवाद का क्या कहना है? क्यों सच्चाई का पता लगाने के लिए मार्क्सवाद की इन बातों को अपनाना होगा-अगर इन बातों को विशेष रूप से जानना है, तो कॉमरेड शिवदास घोष के विचार को जानना होगा, जिन्होंने महान मार्क्स-एंगेल्स-लेनिन-स्तालिन-माओ त्से-तुंग के छात्र होने के नाते द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद को और भी उन्नत और विकसित किया है। सही मार्क्सवादी प्रक्रिया से सोचे बिना चिंतन की एकरूपता (uniformity of thinking) नहीं आयेगी। चिकित्सा विज्ञान में एक चिंतन प्रक्रिया (process of thinking) है। वे एक ही पद्धति से जांच करते हैं, बीमारी का पता लगाते हैं। फिर, खास (particular) बीमारी के मामले में सामान्य चिकित्सा विज्ञान (general medical science) का विशेष रूप से (particularly) प्रयोग किया जाता है। यहां सामान्य (general) और विशेष (particular) में अंतर होता है। कृषि विज्ञान (agricultural science) के मामले में भी यही तरीका काम करता है। दर्शन भी सोच की एक सामान्य प्रक्रिया (general process of thinking) है, इसका भी विशेषीकरण (particularisation) है। मार्क्सवादी विज्ञान को हर देश में, हर स्थिति में हूबहू उसी तरह लागू नहीं किया जा सकता है। उसे ठोस (concrete) परिस्थिति के अनुसार विशेषीकृत (concretise) करना होता है। मार्क्सवाद की समुचित समझ और उन्नत संस्कृति हासिल किये बिना इस रचनात्मकता में महारत हासिल करना संभव नहीं है।

एक और बात है। सब कुछ परिवर्तनशील है। भले ही हम चाहें या न चाहें, भौतिक जगत, प्राकृतिक जगत, सामाजिक जीवन में हमेशा परिवर्तन हो रहा है। फिर सभी परिवर्तन किसी खास नियम द्वारा नियंत्रित हो रहे हैं। यह हमारी इच्छानुसार नहीं होता है। एक नियम है। खास परिवर्तन के लिए खास नियम हैं। फिर, प्रत्येक चीज में–किसी भी सूक्ष्म इलेक्ट्रॉन से लेकर किसी भी विशाल ग्रह में, किसी भी सामाजिक जीवन में, किसी भी व्यक्ति में परस्पर विरोधी ताकतों का द्वन्द्व, विपरीत ताकतों के बीच एकता और संघर्ष (unity and struggle between the opposite forces) का द्वन्द्व अविराम चलता रहता है। इस द्वन्द्व से गति आती है। यही विज्ञान और वैज्ञानिक दर्शन मार्क्सवाद ने दिखाया है। इसलिए किसी भी मामले में विपरीत ताकतों की एकता (unity of opposite forces) क्या काम कर रही है? विपरीत ताकतों की एकता में समाज के मामले में यह निर्धारित करना कि कौन-सी ताकत प्रगतिशील है और कौन-सी प्रतिक्रियावादी, परिवर्तन किस स्तर पर है, वह मात्रात्मक (quantitative) है या गुणात्मक (qualitative), एक परिवर्तन को दूसरा परिवर्तन कैसे निषेध (negate) कर रहा है-ये जो द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद के तीन सिद्धांत हैं (three principals of dialectical materialism): विपरीत ताकतों के बीच एकता और संघर्ष (unity and struggle between the opposite forces), मात्रात्मक परिवर्तन से गुणात्मक परिवर्तन और वाइस-वरसा (quantitative change to qualitative

(शेष पृष्ठ 7 पर)

कॉमरेड प्रभास घोष का भाषण

(पृष्ठ 6 का शेष)

change and vice-versa), निषेध का निषेध (negation of negation)–इनको अच्छी तरह से समझना होगा। इसके अलावा भी समझना होगा कि द्वन्द्व (contradiction) में कौन-सा विरोधात्मक (antagonistic) है, कौन-सा मिलनात्मक (non-antagonistic) है, बाहरी द्वन्द्व (external contradiction) कौन-कौन से हैं, अन्दरूनी द्वन्द्व (internal contradiction) कौन-कौन से हैं–उनमें से कौन-सा किसी खास समय में हावी (dominant) रहता है, मुख्य द्वन्द्व (principal contradiction) और द्वन्द्व का मुख्य पहलू (principal aspect of contradiction) क्या है–मैं दर्शन के इन सब सवालों की यहां व्याख्या करने नहीं जा रहा हूं। मैं केवल इतना कहना चाहता हूं कि अगर मार्क्सवाद को समझना है, तो आपको समझना होगा कि एक परिघटना में ये आम नियम कैसे काम करते हैं। याद रखें, किसी भी जमाने में कोई भी दर्शन, कोई भी विचारधारा इसलिए नहीं आयी कि किसी व्यक्ति विशेष ने चाहा था। किसी खास जमाने में, खास वस्तुगत परिस्थितियों (material conditions) में खास जरूरतों से इनका आगमन हुआ है। व्यक्ति विशेष के माध्यम से वैयक्तिकरण की प्रक्रिया से वह सामाजिक विचार प्रकट हुआ। मार्क्सवाद भी इसी तरह इतिहास की जरूरत से आया है। एक तरफ सामाजिक जीवन में पूंजीवाद और मजदूर वर्ग के बीच संघर्ष तथा दूसरी तरफ आधुनिक विज्ञान की व्यापक प्रगति–इस वस्तुगत परिस्थिति में मजदूर वर्ग की मुक्ति की तलाश में मार्क्स ने आधुनिक विज्ञान को एक हथियार के रूप में इस्तेमाल किया। इसलिए, मार्क्सवाद पूरी तरह से विज्ञान आधारित दर्शन है। विज्ञान की विशेष शाखाओं–रसायन विज्ञान, भौतिकी, जीव विज्ञान, भूगोल, अर्थशास्त्र आदि के खोजे गये विशेष नियमों को द्वन्द्वात्मक प्रक्रिया में संयोजित-समन्वित (coordinate-corelate) कर सामान्यीकरण के रास्ते से द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद के सामान्य नियमों की खोज हुई है, जो नियम हर खास क्षेत्र में खास तौर पर क्रियाशील हैं। विज्ञान की नित्य नयी-नयी खोजों और वर्ग-संघर्ष तथा सामाजिक प्रगति के नये-नये तजुर्बों की रोशनी में मार्क्सवाद भी विकसित होता है और इसके बारे में समझ उन्नततर होती रहती है। इसलिए, जब हम किसी चीज की जांच (examine) करते हैं, किसी कॉमरेड का मूल्यांकन करते हैं, किसी परिघटना का विचार-विश्लेषण करते हैं, किसी समस्या पर विचार करते हैं-चाहे वह प्राकृतिक समस्या हो, सामाजिक समस्या हो, या राजनैतिक समस्या–हम इन सिद्धांतों का प्रयोग कर उन पर विचार करते हैं। ये सिद्धांत अमूर्त रूप (abstract form) में नहीं होते हैं, बल्कि ये ठोस रूप (concrete form) में होते हैं। इसलिए दार्शनिक पहलू से इस विचारधारा को हासिल करना होगा। आम तौर पर हम जानते हैं, पढ़ते हैं, लेकिन जब हम किसी समस्या की जांच करते हैं, तो हम इन सिद्धांतों को प्रयोग करने के बारे में नहीं सोचते हैं या नहीं समझते हैं अथवा नहीं कर पाते हैं। नतीजतन, मुट्ठीभर पार्टी नेताओं पर निर्भर करता है कि वह विचार-विश्लेषण, जांच, मूल्यांकन क्या होगा। सभी स्तरों पर या अधिकांश कॉमरेड इस संबंध में सक्रिय भूमिका नहीं निभा पाते हैं। यह जो मैंने कुछ विश्लेषण किया–मौजूदा परिस्थिति में क्या-क्या हो रहा है, क्या-क्या हो सकता है, मैंने तो अपनी समझ के आधार पर मार्क्सवाद-लेनिनवाद-कॉमरेड शिवदास घोष विचार के अनुसार जो देखा है, सोच-विचार किया है, वह एक चिंतन प्रक्रिया (process of thinking) का प्रयोग करके ही तो किया है? अगर ऐसा अनेक कॉमरेड करेंगे और उसके नतीजतन उनके बीच द्वन्द्व-संघर्ष होगा, तो पार्टी का विचार और विकसित होगा, अन्यथा पार्टी में द्वन्द्वात्मक संबंध विकसित नहीं होगा। इसके अलावा, आप कैसे समझेंगे कि मेरी बात सही है या गलत? इसके चलते हम चाहें या न चाहें यांत्रिक संबंध तैयार होंगे। एक है विचारधारा और दूसरा है किसी मामले पर विचार-विश्लेषण कर किसी फैसले पर पहुंचना। यह है एक चिंतन प्रक्रिया (process of thinking) का प्रयोग कर चिंतन की एकरूपता (uniformity of thinking) पर पहुंचना। पूंजीवाद के बारे में पूरी दुनिया में कॉमरेडों की एक ही व्याख्या है। छोटी पूंजी के बारे में, साम्राज्यवाद के बारे में सभी की एक ही व्याख्या है। रवीन्द्रनाथ के बारे में विचार, गांधीजी के बारे में विचार एक ही है। समाजवाद क्यों ढह गया? इस संबंध में सबका विचार-विश्लेषण एक ही है। यह है चिंतन की एकरूपता। चिंतन की एकरूपता के आधार पर हम जो क्रिया करते हैं, उस क्रिया में एकता होती है। यही है दृष्टिकोण में एकता (oneness in approach)। हम जो दृष्टिकोण अपना रहे हैं, उसमें एकरूपता होती है। इसलिए हम जो अध्ययन करते हैं, उसका उद्देश्य है ये तमाम योग्यताएं हासिल करना। उसके नतीजतन पार्टी में द्वन्द्वात्मक संबंध जीवंत रहेगा और अगर यह द्वन्द्वात्मक संबंध जीवंत रहता है, तो नेता भटकाव के शिकार होने पर भी कार्यकर्ता पार्टी की रक्षा करने में सक्षम होंगे।

सोवियत संघ में, चीन में कार्यकर्ता ऐसा क्यों नहीं कर पाये? क्योंकि उनकी चेतना और संस्कृति का स्तर निम्न था। इसलिए स्तालिन की मृत्यु के बाद, माओ-त्से तुंग की मृत्यु के बाद जिस नेतृत्व ने पार्टी की कमान संभाली, वह पार्टी को जिस दिशा में ले गया, पार्टी उसी दिशा में चली गयी। अंधता की वजह से, चेतना के निम्न स्तर की वजह से, वे नेतृत्व की गलती को पकड़ नहीं पाये। संशोधनवादियों और प्रतिक्रांतिकारियों ने मार्क्सवाद-लेनिनवाद जिन्दाबाद का नारा लगाते-लगाते ही यह काम किया। इसलिए अगर चिंतन और संस्कृति का स्तर उन्नत नहीं हो, तो अंधनिष्ठा पैदा होती है, अन्यथा अंधा विरोध पैदा होता है–दोनों ही नुकसानदेह हैं। और इससे पार्टी में संशोधनवाद अपना बदसूरत सिर उठा सकता है, पार्टी को भटकाव का शिकार बना सकता है। अगर कार्यकर्ताओं की चेतना का मान ऊंचा नहीं है, तो इससे पार्टी का वर्ग चरित्र नष्ट हो सकता है। कॉमरेड क्यों पढ़ेंगे? वे इसलिए पढ़ेंगे कि उनकी विचारधारा, उनका दृष्टिकोण सही रहे; वे समझ सकें कि उनके विचार, उनकी सोच-समझ सही है या नहीं; वे समझ सकें कि बुर्जुआ वर्ग उन पर किस तरह के और कैसे हमले कर रहा है। वे जो सोचते हैं, वह सही है या नहीं, इसे जानने के लिए कॉमरेडों से चर्चा, विचार-विमर्श करना, जिसे सतत् सामूहिक चर्चा-बहस कहा जाता है–नेतृत्व की मदद लेकर ये सारे कार्य उन्हें करने हैं। ऐसा इसलिए करना जरूरी है कि खुद को जो सही लगता है, वह सही है या नहीं और उस संबंध में दृढ़ धारणा (conviction) तैयार हो जाये। साथ ही यह दृढ़ धारणा हो जाये कि हम जीतेंगे, हम कर पायेंगे, हमने जो समझा है वह सच है, वह सही है। यह दृढ़ धारणा बिना ज्ञान के तैयार नहीं हो सकती है। इसी की जरूरत है। विरोधी ताकतों का मुकाबला करना है। वे लोगों में झूठ का प्रचार कर रहे हैं, वे लोगों को गुमराह कर रहे हैं, उन्हें रास्ते से भटका रहे हैं। हम उनका मुंहतोड़ जवाब देकर उन्हें परास्त कर सकें, लोगों को भ्रम से मुक्त कर क्रांति के समर्थन में खड़ा कर सकें–इन सभी कारणों से अध्ययन करना आवश्यक है। यहां यह याद रखना जरूरी है कि सेंटरों में एक साथ रहना महज खाने-रहने की सुविधा के लिए नहीं है। अगर इसका सदुपयोग किया जाये, तो यहां सतत् सामूहिक साहचर्य, सतत् सामूहिक चर्चा-बहस का भरपूर मौका मिलता है। यहां एक स्थान पर रहना-खाना-सोना होता है, इसलिए विचारों के आदान-प्रदान का व्यापक अवसर है। एक-दूसरे को करीब से देखने का मौका रहता है। दूसरे के गुणों से, चरित्र से, तजुर्बे से सीखने का मौका रहता है। फिर दूसरे की कमी-खामी दीखने पर उसे एक कॉमरेड के रूप में प्यार से मदद करने और उसे कमी-खामी से मुक्त करने का अवसर रहता है। यहां किनमें व्यक्तिवादी रुझान है, पति-पत्नी-बच्चे के मामले में कहां बहुत ही सूक्ष्म रूप में कमजोरी विद्यमान है, जाने-अनजाने काम कर रही है, आत्म-आलोचना की मानसिकता है या नहीं, दूसरों की आलोचना को सहर्ष स्वीकार कर सकते हैं या नहीं, आलोचना सही होने पर भी उसमें कहीं कोई और विद्वेष, दुर्भावना काम कर रही है या नहीं–ये सारी छोटी-छोटी बातें दिखाई पड़ती हैं। इन्हें देखकर कोई कॉमरेड दूसरे को कॉमरेड के तौर पर अपनी कमी-खामियों से मुक्त होने में मदद कर सकता है। कौन सेंटर का काम सहर्ष स्वेच्छा से करता है, कौन तबीयत खराब या बाहर के काम के बहाने काम करने से बचता है, कौन कहने पर काम करता है और कौन अपनी जिम्मेवारी समझकर बिना कहे भी काम करता है–इन सब को लेकर ही चरित्र का निर्माण होता है। इसलिए दूसरी-दूसरी पार्टी बॉडी जहां काफी महत्वपूर्ण हैं, वहीं दूसरे पहलू से पार्टी सेंटर का जीवन भी काफी महत्वपूर्ण है। यह सामूहिक जीवन के निर्माण और चरित्र गठन में मदद करता है, बशर्ते कि नेतृत्व सही तरीके से मार्गदर्शन करे।

जनवादी केन्द्रीयता (Democratic centralism) के बारे में एक सवाल आया है। मैं इस विषय पर विस्तार से चर्चा नहीं करने जा रहा हूं। कम्युनिस्ट पार्टी को एक अखंड (monolithic) पार्टी कहा जाता है। मस्तिष्क केन्द्र है और वह अन्य अंग-प्रत्यंगों का संचालन करता है। फिर मस्तिष्क अंग-प्रत्यंगों के बिना काम नहीं कर सकता। पार्टी के मामले में, हूबहू ऐसा नहीं है। पार्टी के कार्यकर्ता अंग-प्रत्यंग नहीं हैं, हर किसी के पास एक मस्तिष्क है। केन्द्रीयता (Centralism) के बिना कोई काम नहीं होता है। यहां तक कि एक परमाणु (Atom) में भी केन्द्रीयता होती है। हर चीज में केन्द्रीयता होती है। शरीर की एक कोशिका (Cell) में भी केन्द्रीयता होती है। यहीं से क्रांतिकारी पार्टी केन्द्रीयता का अनुसरण करती है। लेकिन वह केन्द्रीयता सर्वहारा जनतंत्र (Proletarian democracy) के आधार पर केन्द्रीयता है। अगर हम सर्वहारा संस्कृति नहीं अपना पायेंगे, तो सर्वहारा जनतंत्र नहीं आ पायेगा। कॉमरेड शिवदास घोष ने पार्टी गठन के संदर्भ में दिखाया था कि शुरुआत में जो लोग पहलकदमी करते हैं, मार्क्सवाद की सही समझ क्या होगी, जीवन के सभी क्षेत्रों में मार्क्सवाद के अमल के आधार पर कैसा वैचारिक सिद्धांत होगा, कैसी सर्वहारा संस्कृति होगी, किस प्रक्रिया में संगठन का निर्माण होगा–इन सबको लेकर बड़े पैमाने पर सिद्धांत और व्यवहार का संघर्ष चलाकर द्वन्द्वात्मक तरीके से जब सामूहिक ज्ञान का सृजन करने में सक्षम होते हैं और वह सामूहिक ज्ञान किसी एक नेता के माध्यम से सर्वश्रेष्ठ रूप में अभिव्यक्त होता है, अर्थात् सामूहिक ज्ञान विशेषीकृत होता है, तब समझना होगा कि व्यक्तिवाद को खत्म कर सर्वहारा जनतंत्र और सर्वहारा संस्कृति निर्मित हुई है, सामूहिक नेतृत्व निर्मित हुआ है। यही है वैचारिक केन्द्रीयता। इसी के आधार पर पार्टी में संगठनात्मक केन्द्रीयता को निर्मित करना होता है। इसलिए सही मार्क्सवादी पद्धति से वैचारिक केन्द्रीकरण की प्रक्रिया से ही सर्वहारा जनतंत्र के आधार पर केन्द्रीयता विकसित होती है। पार्टी का संविधान इसी को प्रतिफलित करता है। कॉमरेडों को समझना होगा कि व्यक्तिवाद सर्वहारा जनतंत्र में बाधक है। मेरा यह कहना नहीं है कि हम इससे रातों-रात मुक्त हो सकते हैं–भले ही हमारी कितनी ही सद्

(शेष पृष्ठ 8 पर)

कॉमरेड प्रभास घोष का भाषण

(पृष्ठ 7 का शेष)

इच्छा क्यों न हो। लेकिन, हमें सचेत रहना होगा, सतर्क रहना होगा। हमें कॉमरेड शिवदास घोष की शिक्षाओं के अनुसार निरंतर संघर्ष करना होगा, क्योंकि अगर व्यक्तिवाद रह गया, तो दो रुझान रहते हैं। इससे या तो अंध वफादारी विकसित होती है या फिर अंध विरोध पैदा होता है, जो उग्र जनतंत्र (Ultra democracy) को जन्म देता है। और अगर व्यक्तिवाद रहा, तो नेतृत्व में जो लोग रहते हैं, उनमें सत्तावाद, तानाशाही या अफसरशाही पायी जाती है। अर्थात् मैं नेता हूं, मैं ही सबसे अच्छा समझता हूं, मैं बिल्कुल सही समझता हूं, मैं सीनियर हूं, मैं पहले पार्टी में आया हूं, इसलिए समझाने वाले आप कौन होते हैं? इतने अशिष्ट ढंग (Crude way) से नहीं समझने से भी, ऐसे विचार आते हैं। सर्वहारा जनतंत्र के आधार पर सामूहिक ज्ञान को केन्द्रीकृत करना होता है। सर्वहारा जनतंत्र के आधार पर किसी भी विचार को केन्द्रीकृत करना–किसी सेल में, किसी लोकल कमिटी में, किसी जिला कमिटी में, किसी राज्य कमिटी में, केन्द्रीय कमिटी में या फिर पार्टी कांग्रेस या किसी मंच में, जिस किसी भी मामले में कोई फैसला लेना हो, द्वन्द्वात्मक पद्धति से तर्क-बहस कर द्वन्द्वात्मक भौतिकवादी विचार का प्रयोग कर किसी फैसले पर पहुंचना होता है। फिर, किसी भी द्वन्द्व का मतलब द्वन्द्वात्मक नहीं होता है, तर्क-बहस का मतलब ही द्वन्द्वात्मक नहीं है। द्वन्द्वात्मक भौतिकवादी विज्ञान का प्रयोग कर उससे निर्धारित जो सूत्र निरीक्षित-परीक्षित होकर तैयार हुए हैं, उनके आधार पर कुछ तर्क आधार (Premise) पहले ही स्वीकृत हो चुके हैं–जिन पर नये सिरे से चर्चा करने की आवश्यकता नहीं है–उनके आधार पर इस पर चर्चा करनी होती है। क्या मजदूर वर्ग की क्रांतिकारी पार्टी की जरूरत, सामूहिक नेतृत्व की जरूरत पर नये सिरे से चर्चा करने की आवश्यकता है? शुरू से ही, जब हम पार्टी में शामिल होते हैं, तब इन बातों को समझकर शामिल होते हैं। जैसे साम्राज्यवाद, पूंजीवाद, संशोधनवाद, उग्र कठमुल्लावाद–इनकी विशेषताएं क्या-क्या हैं, इनको लेकर रोजाना चर्चा करने की जरूरत नहीं पड़ती है। सर्वहारा क्रांतिकारी पार्टी के चरित्र के अनुसार अॅथॉरिटी संबंधी धारणा, अनुशासन संबंधी धारणा–इन बातों को समझकर ही तो हम पार्टी में शामल हुए हैं। लेकिन जब किसी काम के बारे में, किसी आंदोलन के बारे में, किसी कॉमरेड के मूल्यांकन के बारे में कोई फैसला लेना होगा, तो जो लोग चर्चा में शामिल हैं, वे अपनी समझ के अनुसार चर्चा करेंगे और हर किसी को अपनी बात कहने के लिए पर्याप्त समय देना होगा। चर्चा के जरिये जो सच्चाई उभरकर आयेगी, उसे सभी को संतुष्टि के साथ स्वीकार करना होगा। हर किसी की मानसिकता यह जानने की होनी चाहिए कि कौन-सी सच्चाई उभरकर आ रही है। ऐसा नहीं कि मैं जो कह रहा हूं, उसे सभी से मनवाना होगा। यह व्यक्तिवादी रुझान है। ऐसा नहीं होना चाहिए कि मेरी बात ही माननी होगी। या अगर मेरी बात मान ली गयी, तो मैं बहुत खुश हो गया। अगर मेरी बात मान ली गयी, तो इसमें खुश होने की क्या बात है? क्या यह मेरी जीत है? पार्टी की शिक्षाओं के माध्यम से एक सच्चाई मेरे जरिये सामने आयी, अर्थात् मुझे पार्टी से जो विचारधारा प्राप्त हुई है, मैं उसे सही तरह से लागू कर पाया हूं, बस इतनी-सी बात है। क्या यह मेरा व्यक्तिगत श्रेय है? और अगर मेरा प्रस्ताव स्वीकार नहीं किया गया, तो क्या वह मेरी बदनामी है? जैसे डॉक्टर मेडिकल बोर्ड में विचार करने के लिए बैठते हैं कि इसे टीबी है या टाइफाइड बुखार है। इस तरह वे जांच करने बैठते हैं न? फिर चिकित्सा विज्ञान में जो बीमारी पकड़ी जाती है, उसे ही सभी मानते हैं। तब क्या वे लड़ाई-झगड़ा करते हैं कि मेरी ही बात माननी होगी? जो कुछ प्रयोग-परीक्षण (Experiment) में पाया जायेगा, हर कोई उसे खुशी-खुशी मान लेगा। मार्क्सवाद-लेनिनवाद-कॉमरेड शिवदास घोष के विचार का प्रयोग कर जो सही पाया जायेगा, उसे चाहे जो भी कहे–चाहे वह जूनियर कॉमरेड हो, चाहे सीनियर कॉमरेड हों, उसे ही मान लिया जायेगा। नेतृत्व उसे ही कार्यान्वित करेगा। एक कॉमरेड जो बात कह रहा है, मैं भी वही बात कह रहा हूं, लेकिन समझ के मामले में, व्यवहार के मामले में मैं उससे आगे हूं। इसलिए मैं उसका नेता हूं, जब तक कि मेरी वह योग्यता है।

कॉमरेड शिवदास घोष ने कहा था कि कॉमरेडों का दोष ढूंढ़ना हमारा काम नहीं है। यह पता लगाना हमारा काम नहीं है कि किसमें क्या-क्या दोष हैं। मैंने देखा है कि अगर कोई कॉमरेड उनके साथ किसी के दोष पर चर्चा करने जाता, तो वे पहले उससे पूछते थे कि मुझे पहले यह बताओ कि उसके गुण क्या-क्या हैं। मैं भी इसका अनुसरण करने की कोशिश करता हूं। क्योंकि बुर्जुआ समाज से हमें जो मिला है, मैं बड़ा हूं, यह दिखावा करने की झोंक, और यह साबित करने की झोंक कि वह कितना छोटा है। हमारे बीच बुर्जुआ प्रतिस्पर्द्धा है, जैसे कि व्यापारियों के बीच इस बात को लेकर प्रतिस्पर्द्धा है कि किसका सामान ज्यादा बिकेगा। इसी तरह मेरा प्रभाव अधिक है, या उसका प्रभाव अधिक है, उसकी प्रतिष्ठा अधिक है या मेरी प्रतिष्ठा अधिक है, किसे अधिक महत्व मिल रहा है–इस तरह की विचित्र प्रतियोगिता (Typical competition) भी पायी जाती है। यह सब हमें इसी समाज से मिला है। इसके लिए किसी को दोषी नहीं ठहराया जाना चाहिए। मैं इस समाज की बीमारी ढो रहा हूं। इसलिए कॉमरेड शिवदास घोष ने किसी का दोष ढूंढ़ने के लिए नहीं कहा था। उन्होंने कहा था कि जनता को देखिए, कार्यकर्ताओं को देखिए, नेता को देखिए, हमेशा देखिए कि उनके गुण क्या-क्या हैं। नजर होगी गुण देखने की, क्योंकि आप उनसे सीखना चाहते हैं। जीवित मनुष्य में ही जीवित गुण होते हैं, आप दोष क्यों ढूंढ़ रहे हैं? फिर उन्होंने दूसरी जगह कहा है कि आप गुण ढूंढ़ने गये हैं, लेकिन कुछ अवगुण नजर आ गये। अगर आपका देखना सही है, तो उस कॉमरेड के उस अवगुण की वजह से आपको तकलीफ होगी। पहले यह विचार करें कि क्या आपका देखना सही है। किसी कॉमरेड का अकेले-अकेले मूल्यांकन करना (रीडिंग लेना) सही नहीं है, यह भी उन्हीं की सीख है। व्यक्तिगत रूप से मूल्यांकन करना सही नहीं है। या तो कोई फोरम मूल्यांकन करेगा, या कोई बॉडी मूल्यांकन करेगी, या फिर नेतृत्व मूल्यांकन करेगा, जो नेतृत्व सामूहिक बॉडी का प्रतिनिधित्व करता हो। जो आपको सही लगता है, उसे ही सत्य न मान लें। 'कम्युनिस्ट आचरण-विधि' की चर्चा में इस बात का दो जगह जिक्र है। कॉमरेड घोष जैसी हस्ती खुद अपने बारे में कह रही है कि वे किसी की आलोचना के क्रम में पहले खुद इस बात की जांच करते थे कि उनसे कोई गलती तो नहीं हुई है। इतनी बड़ी हस्ती होकर भी वे इस तरह से सोचा करते थे। और हमारे बीच कुछ लोग हैं, जिनमें अक्सर ऐसा कहने की प्रवृत्ति होती है कि फलां ऐसा है, फलां वैसा है। याद रखें, आदमी को समझने की कोई प्रयोगशाला नहीं है। बीमारी का पता लगाने की प्रयोगशाला है, वस्तु-कणों को जानने-समझने के लिए उपकरण हैं, लेकिन ऐसा नहीं होता है कि एक आदमी को मशीन में डाल दिया और उसे समझ लिया। यहां तक कि मनोचिकित्सक भी कभी-कभी असफल हो जाते हैं। यह सही है कि मनोविज्ञान एक विज्ञान है, लेकिन हमेशा सबकुछ समझ में नहीं आता है। वहां उनकी व्यक्तिगत राय (Individual reading) काम करती है। इसलिए अगर सही-सही समझना है, तो द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद की गहरी समझ, काफी तजुर्बे, अत्यंत ऊंचे स्तर के नैतिक मान, और निर्वैयक्तिक मनोभाव (Impersonal attitude) की जरूरत है। इसके साथ ही सामूहिक फैसले के प्रति हम अपने को सहर्ष समर्पित कर सकें, ऐसा स्तर हासिल करना है? फिर भी, हमें अन्य लोगों के साथ विचार-विमर्श कर लेना होता है। मैंने कॉमरेड शिवदास घोष को देखा है, अगर किसी कॉमरेड के बारे में मन में कोई बात आती थी, तो उनसे जूनियर होने के बावजूद वे हम लोगों से भी पूछा करते थे कि आप लोगों की क्या राय है। अर्थात् उनके मन में जो बात आती थी, उसकी वे जांच कर लिया करते थे। जो बातें हम लोगों से कही जा सकती थीं, उन बातों पर वे हम लोगों के साथ चर्चा किया करते थे। यह जो हम अक्सर किया करते हैं कि मुझे ऐसा लगता है, मुझे वैसा लगता है–यह बुर्जुआ दृष्टिकोण है। किसी के प्रति गुस्सा आ गया है, किसी ने बुरा व्यवहार किया है, हो सकता है कि उसने सचमुच ही बुरा व्यवहार किया हो, लेकिन उसी क्षण उस पर विचार नहीं करना चाहिए। पहले गुस्सा खत्म हो जाये, क्षोभ शांत हो जाये, फिर ठंढ़े दिमाग से उस पर विचार कीजिए। यह भी उन्हीं की सीख है। यहां तक कि अगर किसी ने कोई बुरा व्यवहार भी किया हो, तो पलट कर प्रतिक्रिया करना बुर्जुआ मानसिकता है। हो सकता है कि उस कॉमरेड ने सचनुच कुछ बुरा किया हो, आपको यह सोचकर दुःख होगा कि मेरा कॉमरेड बुरा काम कर रहा है और इससे तो उसका नुकसान होगा, पार्टी का नुकसान होगा। इसलिए हमें प्यार से उसकी मदद करनी होगी। उन्होंने यहां तक कहा था कि दूसरों के बारे में विचार करते समय उसकी जगह पर खुद को रखकर विचार करें। उन्होंने कहा था कि अगर मैं उसकी जगह होता, तो मैं क्या करता? उन्होंने कहा था कि अगर मैं पिता होता, मां होती, पत्नी होती, भाई-बहन होता, तो मैं उस मामले में क्या करता? उन्होंने कहा था कि ऐसा न होने पर विचार-विश्लेषण निर्वैयक्तिक नहीं होगा। वहां पर खुद को रखकर उसकी समस्या समझनी होगी। फिर उन्होंने यह सीख दी कि हमेशा अपनी खुद की कमी-खामियों, सीमाबद्धताओं को ढूंढ़िए। अपना मूल्यांकन, अपने गुण पर विचार खुद न करें। कौन, कहां आपके गुणों की तारीफ कर रहा है, उस पर ध्यान न दें। अगर आपका कोई गुण है, तो वह रहेगा ही–चाहे कोई उसे मान्यता दे या न दे। देखना होगा कि आपके पास कौन-सा गुण नहीं है या आपकी क्या कमी-खामी है, क्या सीमाबद्धता है। क्योंकि आप तो आगे बढ़ना चाहते हैं, बड़ा बनना चाहते हैं। अगर आप अपनी कमी-खामियों से मुक्त नहीं हुए, अगर आपने अपनी सीमाबद्धताओं को दूर नहीं किया, तो आप कैसे बड़ा बनेंगे? इसलिए अगर कोई आपकी कमी-खामी दिखाए, चाहे वह ऐसा प्यार से करे या नाराजगी से करे, यहां तक कि अगर वह ऐसा दुश्मनी से भी करे–अगर उसमें सच्चाई हो, तो उसे स्वीकार कीजिए। इससे आप त्रुटिमुक्त होकर और बड़ा बन जायेंगे। उन्होंने यहां तक कहा था कि उस आलोचक को आप अपना शिक्षक मानिए।

उन्होंने यह भी कहा कि दूसरों की त्रुटियों को लेकर उन्हें ताने न दें। उन्होंने सभी कॉमरेडों से कहा कि आप अपनी सामान्य त्रुटि के बारे में सतर्क रहें। ये सभी कॉमरेड शिवदास घोष की बातें हैं। हमने उनके व्यवहार को आमने-सामने से देखा है। उनके अंदर नीति-नैतिकता कूट-कूटकर भरी थी। उन्होंने सुबोध बैनर्जी की याद में कहा था कि सुबोध बनर्जी या इस स्तर के किसी के भी द्वारा थोड़ी-सी भी गलती होने पर मैं उसकी कड़ी आलोचना करता हूं। क्योंकि वे पार्टी के स्तम्भ हैं। उनकी मामूली-सी गलती से पार्टी को काफी नुकसान हो सकता है। उन्होंने मुझे देखा है, वे मुझे पहचानते हैं। वे जानते हैं कि मैं उनके अच्छे के लिए ही ऐसा करता हूं। लेकिन मैं जूनियर कॉमरेडों के मामले में ऐसा नहीं करता। मैं खुद जानता

(शेष पृष्ठ 9 पर)

कॉमरेड प्रभास घोष का भाषण

(पृष्ठ 8 का शेष)

हूं कि कॉमरेड शिवदास घोष ने किसी खास वजह से गुस्साकर एक जूनियर कॉमरेड को डांट-फटकार लगायी थी। जब उन्होंने देखा कि उस कॉमरेड का चेहरा लाल होकर उतर गया है, तो वे उसके पीछे-पीछे गये और उसे बैठाकर कहा कि मेरा आपको इस तरह से बोलना ठीक नही था। वे इस उच्च स्तर के नीति-नैतिकता सम्पन्न व्यक्ति थे। वे हर आचरण-व्यवहार के मामले में ऐसी उच्च नीति-नैतिकता से लैस थे।

उन्होंने दिखाया था कि कमजोरी और प्यार एक चीज नहीं हैं। उन्होंने चेतावनी देते हुए कहा था कि प्यार आदमी को बहुत ऊपर उठाता है, फिर वह आदमी को गिरा भी देता है। जहां प्यार में विचार और नीति-नैतिकता काम नहीं करती है, पारंपरिक दृष्टिकोण काम करता है, जहां प्यार कमजोर करता है, वहां गिरावट आती है। जहां प्यार विचारधारा पर आधारित होता है, नीति-नैतिकता पर आधारित होता हैं, वहां वह ताकत प्रदान करता है, एक-दूसरे को विकसित करता है। बच्चों के सवाल पर, पति-पत्नी के सवाल पर, भाई-बहन के सवाल पर, विभिन्न सवालों पर उन्होंने चेतावनी दी थी। उन्होंने यह बात भी कही थी कि किसी भी ऊंचे स्तर की कोई गारंटी नहीं है। आप चाहे कितने ही ऊंचे स्तर पर पहुंच गये हों, वही आपकी गारंटी नहीं है। वे कहा करते थे कि मेरी भी कोई गारंटी नहीं है। मैं एक कम्युनिस्ट हूं, मृत्यु के अंतिम क्षण तक इसका इम्तहान देते रहना होगा। इसलिए भले ही किसी ने उन्नत स्तर हासिल कर लिया हो, बाहर से घुन की तरह बुर्जुआ संस्कृति आदतों के वायरस के रूप में हर पल हमला कर रही है। अत: हमेशा सतर्क रहते हुए लड़कर अपनी रक्षा करनी होती है।

अब पार्टी के कुछ कॉमरेडों में आत्मसंतुष्टि की मानसिकता काम कर रही है। संयुक्त सीपीआई, सीपीआई(एम), नक्सली-जिनके प्रति कभी लोगों का अंध समर्थन था, भरोसा था। अब उनकी गतिविधियों, उनके चाल-चलन को देखकर उन पर लोगों की आस्था नहीं है, भरोसा नहीं है। अब वे बदनाम हो चुके हैं। इसलिए हमें देखकर लोगों के बीच पार्टी की सराहना बढ़ रही है, समर्थन बढ़ रहा है। थोड़ी-सी कोशिश करने पर हमें चंदा मिल जाता है। पहले नेताओं के लिए भोजन का भी बन्दोबस्त नहीं हो पाता था। अब ऐसा नहीं है। जरा-सी कोशिश से ही कुछ लोग आ रहे हैं-इन सब को लेकर आत्मसंतुष्टि की मानसिकता विकसित हो रही है। एक समय ट्रेन में, बस में, सड़क पर जो कोई मिलता था, हम उसी को समझाने की कोशिश करते थे, पार्टी में जोड़ने की कोशिश करते थे। उस समय सभी की यह कोशिश होती थी कि भाई, बहन, दोस्त और रिश्तेदारों को कैसे पार्टी से जोड़ा जाये। आज इस तरह से पार्टी के साथ जोड़ने की कोशिशें काफी हद तक समाप्त हो गयी हैं। क्योंकि यूं ही बहुत लोग मिल रहे हैं। ये शंकर साहा बता सकते हैं कि उनके लिए नेताओं ने कितनी कोशिश की थी। सौमेन बता सकते हैं। उस स्थिति को थोड़ा-बहुत अशोक ने देखा है, रूपम ने देखा है, तरुण ने भी देखा है। इन सभी के पीछे कमोबेश मेहनत है। यह जो इस्मी यहां बैठी हुई है, उसे गांव से कैसे लाया गया? बुलबुल को पता है कि उसे कैसे बचाया गया था। उस समय, केवल मैं ही नहीं, बल्कि मेरे सीनियर, हम सभी इस तरह से एक-दो लोगों को लेकर आये। हमारा पूरा ध्यान इसी बात पर रहता था कि पार्टी को कैसे विकसित किया जाये। कॉमरेड शिवदास घोष अपने शुरुआती जीवन में किसी एक आदमी को पाने के लिए बिना कुछ खाये-पिये मीलों पैदल चला करते थे। आज अगर हम सब मिलकर आत्मसंतुष्टि की मानसिकता को त्याग कर उसी तरह काम करें, तो पार्टी की ताकत और भी कितनी ज्यादा बढ़ जायेगी! जरा आप सोचकर देखिए।

जब हमारी प्रशंसा की जाती है कि आप लोगों का व्यवहार बहुत अच्छा है, आप लोग बहुत अच्छे हैं, आपकी पार्टी बहुत अच्छी है- यह सुनकर हममें से कई लोग ऐसा नहीं कहते कि जिस हद तक आप सोचते हैं कि हम अच्छे हैं-यह अच्छाई आयी कहां से? मौजूदा प्रदूषित माहौल में मैं भी तो बुरा बन सकता था। मुझमें आप जो कुछ अच्छाई देख रहे हैं, वह तो मार्क्सवाद-लेनिनवाद-कॉमरेड शिवदास घोष की शिक्षाओं का नतीजा है। मार्क्सवाद-लेनिनवाद-कॉमरेड शिवदास घोष की शिक्षाएं महान विचार हैं। आज के जमाने में एकमात्र यही विचार चरित्र दे सकता है। अगर हम लोगों को इस तरह से नहीं बतायेंगे, तो लोगों को इस बारे में जानकारी कैसे होगी?

दूसरा, एक और हमला हो रहा है। वह है उपभोक्तावाद का प्रभाव। यह समाज को काफी प्रभावित कर रहा है। ऐशो-आराम की मानसिकता, आरामपरस्ती-इन सभी का प्रभाव काफी कॉमरेडों को गिरफ्त में ले रहा है। इन्हें कॉमरेड शिवदास घोष नापसंद किया करते थे। मैं कई बार अनावश्यक लाइट जलता देखकर उसे बुझा देता हूं। फिर यह कहना झूठ होगा कि मुझसे गलती नहीं होती है। मैं भी कभी-कभी गलतियां करता हूं। लेकिन कई बार जरूरत न होने पर भी लाइट जलती ही रहती है। यह तो जनता का पैसा है। कॉमरेड रंजीत धर की स्मृति सभा के अपने भाषण में मैंने कहा था कि कॉमरेड रंजीत धर को कॉमरेड शिवदास घोष ने एक बार इसलिए डांट-फटकार दिया था कि उन्होंने साबुन का इस्तेमाल ज्यादा किया था। भोजन के मामले में, साबुन के मामले में, टूथब्रश के मामले में, कपड़े के मामले में-एक दृष्टिकोण यह है कि जितना न्यूनतम आवश्यक है, अगर संभव हो सके, तो मैं उसे जुटाऊंगा। दूसरा दृष्टिकोण है मुझे और चाहिए। मुझे सबसे आधुनिक महंगी चीजें चाहिएं। अगर नहीं मिलती हैं, तो मन बेचैन हो जाता है। मेरे अनजाने में मुझ पर प्रचलित समाज के उपभोक्तावाद का जो प्रभाव पड़ रहा है, उससे काफी दिक्कतें पैदा हो रही हैं। कई लोग पार्टी कॉमरेडों को कुछ-कुछ देते हैं। उन्हें लगता है कि कॉमरेड कष्ट में हैं। कॉमरेड भी ले लेते हैं। सोचा है कि इससे क्या नुकसान होता है? मैं तो पार्टी द्वारा दी गयी जिम्मेदारी का निर्वाह कर रहा हूं। यह सही है। लेकिन दूसरी तरफ मैं धीरे-धीरे बुर्जुआ उपभोक्तावाद का शिकार बन रहा हूं। मुझे इसकी भनक तक नहीं लग रही है। बहुत ऐसे नुकसान हैं, जो सरसरी तौर पर देखने से नजर में नहीं आते। वैसे नुकसान बड़े ही सूक्ष्म रूप में होते हैं। इसमें ऐसा क्या नुकसान है-हम इस तरह से तर्कसंगत बनाते-बनाते (rationalise) इसे तरजीह देते हैं। जब वह बड़ा आकार ले लेता है, तब उसे संभालना मुश्किल हो जाता है। हम जिस तरह ढूंढ़कर फटे-पुराने कपड़े पहनकर लोगों को नहीं दिखाएंगे कि हम कितने त्यागी हैं, लेकिन फिर मौका रहते हुए भी हम ऐशो-आराम, भोगविलास को प्रश्रय नहीं देंगे। इन दोनों के बीच अंतर की सीमारेखा कहां है, इसे अच्छी तरह समझना चाहिए। याद रखें, क्रांतिकारियों के नाते हमें लम्बे अर्से तक जेलों में रहना पड़ सकता है, भूमिगत (underground) होना पड़ सकता है, जंगल-पहाड़ों में रहना पड़ सकता है, कोई ठौर-ठिकाना नहीं होगा, भोजन नहीं जुटेगा-ऐसे हालात हो सकते हैं। इसके लिए जीवन के सफर में हमेशा खुद को तैयार रखना होता है। मेरे पास बहुत-सी साड़ियां हैं, मेरे पास अनेक कमीज-पैंट हैं; जबकि दूसरे कॉमरेड के लिए इन सबका इंतजाम नहीं है। मैं उसके बारे में नहीं सोचता या अगर उसे देता भी हूं, तो अपनी पसंद का देता हूं। देने का भी एक निजी दृष्टिकोण होता है, पसंद होती है।

एक और हमला जूनियरों के मामले में हो रहा है, उससे सावधान रहने की जरूरत है। नर-नारी के संबंध के मामले में पहले जितने बंधन थे, रुचि-संस्कृति का बंधन था, अब वह अत्यंत भद्दे रूप में खुलकर सामने आ गया है। इसका प्रभाव हमारे जूनियर कॉमरेडों पर बिल्कुल ही नहीं पड़ रहा है, ऐसा सोचकर उसे नजरअंदाज करना ठीक नहीं है। यौवन में सेक्स एक प्रबल शक्ति के रूप में बार-बार अपील करता है। उचित मार्गदर्शन नहीं मिलने से कई होनहार कार्यकर्ताओं का भी नुकसान होता है। एक मार्क्सवादी विचारक के रूप में कॉमरेड शिवदास घोष ने इस संबंध में बेशकीमती मार्गदर्शन दिया है। इस मामले में गलती हो सकती है, बहुत बड़ी गलती भी हो सकती है, क्योंकि सेक्स का तकाजा बहुत जोरदार होता है। अतीत में जब समाज में मूल्यबोधों का प्रभाव था, तब भी इस शक्ति को नियंत्रित करना मुश्किल था। और अब तो कोई मूल्यबोध ही काम नहीं कर रहा है। एक मदहोशी है, शराब के नशे की तरह एक नशा है, इसमें रुचि-संस्कृति काम नहीं कर रही है, भद्रता-शालीनता काम नहीं कर रही है। इसलिए, इस मामले में कॉमरेड शिवदास घोष के मार्गदर्शन को अच्छी तरह समझकर वरिष्ठ कॉमरेडों को चाहिए कि वे जूनियर कॉमरेडों की मदद करें। किसी तरह की गलती होने पर हमलावर न होकर, उसे ठेस न पहुंचा कर, उसकी आलोचना न कर; बल्कि धैर्य से, ठण्डे दिमाग से, प्यार से और सहानुभूतिपूर्वक कॉमरेड शिवदास घोष की शिक्षाओं के अनुसार खास क्षेत्र में ठोस मार्गदर्शन करना होगा। जूनियर कॉमरेडों की रक्षा करने के मामले में, इन तमाम मामलों में नेतृत्व को बहुत सजग रहना होगा। विकृत यौन संबंध (Vulgar sex) का प्रभाव किस पर, किस तरह पड़ रहा है-उच्च नेतृत्व को यह बात समझते हुए कॉमरेडों की मदद करनी होगी।

एक और विषय पर मैं यहां चर्चा करना चाहूंगा, वह यह है कि पार्टी, जन संगठनों और मंचों के साथ बहुत सारे किसान-मजदूर परिवारों के बच्चे, पीड़ित महिलाएं, जनवादी सोच वाले शिक्षाविद-बुद्धिजीवी-वैज्ञानिक-कलाकार और विशेष रूप से छात्र-नौजवान जुड़ते जा रहे हैं। विभिन्न राज्यों में बहुत सारे सम्पर्क मिल रहे हैं। पार्टी का तेजी से विस्तार हो रहा है। लेकिन उस अनुपात में योग्य और सक्षम नेता तैयार नहीं हो रहे हैं। अभी जो विभिन्न स्तरों पर नेता हैं, उन्हें नव आगंतुकों का मार्गदर्शन करने के लिए तेजी से कॉमरेड शिवदास घोष की शिक्षाओं के आधार पर वैचारिक, चारित्रिक और संगठनात्मक योग्यता हासिल करने की आवश्यकता है। यह बहुत अच्छा लक्षण है कि अनेक प्रतिभाशाली छात्र नौकरी का मोह, पारिवारिक आकर्षण छोड़-छाड़कर पार्टी में शामिल हो रहे हैं। उनकी अच्छी तरह से देखरेख करें। उनके गुणों को विकसित करें। उन्हें अपनी योजना से काम करने दें। उन्हें अपनी पहल पर काम की योजना तैयार करने दें। उन्हें काम करने दें। भले ही वे गलती करें, फिर भी उन्हें काम करने दें। किसी के दिल को ठेस पहुंचा कर उसकी आलोचना न करें। यत्न और स्नेह-प्यार के साथ उसकी गलतियों को सुधार दें। याद रखें, ये ही इस क्रांतिकारी पार्टी के भविष्य हैं।

लोगों के बीच रहना हमारे जीवन का तरीका (Mass life is our mode of life) होना चाहिए। लोगों के बीच सिर्फ कार्यक्रम, पार्टी मुखपत्र बेचने और चंदा के लिए ही नहीं जाना चाहिए। लोगों से प्यार के चलते हमने घर छोड़ा है। क्रांतिकारी राजनीति उच्चतर हृदयवृत्ति है-यह तो कॉमरेड शिवदास घोष की ही बात है। चूंकि हम शोषित-पीड़ित लोगों से प्यार करते हैं, इसलिए हम क्रांति चाहते हैं। इसी के लिए हमें क्रांतिकारी पार्टी की जरूरत है, इसी

(शेष पृष्ठ 10 पर)

R.N.I. No.- 43022/85
P.R.No.-DL(C)-01/1123/2018-20
Posting at New Delhi PSO on 7–8 and 22–23 of every month, Fortnightly, Date of Publication : May 12, 2020

कॉमरेड प्रभास घोष का भाषण

(पृष्ठ 9 का शेष)

के लिए कॉमरेड शिवदास घोष की शिक्षाओं की जरूरत है। अगर हम लोगों के सुख-दु:ख में शामिल नहीं होंगे, उन्हें नहीं जानेंगे, नहीं समझेंगे, तो हमारे अंदर वह हृदयवृत्ति कहां से आयेगी? अगर दिल से दिल का जुड़ाव न हो, अगर दुख-दर्द-पीड़ा का अहसास न हो, अगर यह निरंतर सजीव न रहे, तो क्या हृदयवृत्ति रह सकती है? हम जिस मुहल्ले में रहते हैं या जहां कहीं भी रहते हैं, वहां के लोगों के साथ मिलना-जुलना ही हमारा काम है। उनके बुरे वक्त में, उनकी मुसीबत के क्षणों में उनके साथ डटकर खड़े रहना ही हमारा काम है। फिर इसके जरिये लोगों में बदलाव लाना ही मेरा काम है। इन सब की जरूरत है।

मैं फिर कह रहा हूं कि सीनियर कॉमरेड सीनियर होने के अहंकार से ग्रसित न हों। जो जूनियर कॉमरेड विकसित हो रहे हैं, जो अपनी योग्यता और काबिलियत का परिचय दे रहे हैं, उन्हें आदर की नजर से देखना चाहिए। उन्हें खिलने देना है। आलोचना के मामले में कॉमरेड शिवदास घोष की आचरण विधि का अनुसरण करना चाहिए। बड़ा होने के नाते, नेता होने के नाते मैं जैसे-तैसे नहीं बोल सकता। उसका एक निश्चित आचरण है, रुचि-संस्कृति है और मेरे अंदर मौजूद किसी भी कमी-खामी के बारे में जूनियर कॉमरेड निस्संकोच, बेहिचक मुझे बता सकें, यह रास्ता मुझे ही तैयार कर देना होगा। मुझसे अपनी बात कह नहीं सकते–इस संबंध में नेता के नाते मेरा दोष जूनियर के दोष से अधिक है। मेरी खुशामद करता है, मुझे खुश करता है, मुझसे डरता है, जिसकी वजह से वह प्यारा है- क्या यह कोई स्तर है? मैं डांटता हूं, दबदबा दिखाता हूं, ऐसा माहौल बना देता हूं कि कोई मेरे दोष के बारे में कुछ कह नहीं सकता, कोई मुझसे तर्क-बहस नहीं कर सकता–ऐसा नहीं होना चाहिए। अगर कोई नेता पार्टी काम-काज में अड़चन पैदा करता है, तो जूनियर होने के नाते मैं अपना मुंह क्यों नहीं खोलूंगा? क्या मैं सरकारी नौकरी करने आया हूं कि ऊपर वालों की नजरों में बुरा लगने पर मेरी नौकरी चली जायेगी? क्या इसीलिए मैंने घर-द्वार और कॅरियर छोड़ा था? क्या मैं डरपोक हूं? इसके अलावा, अगर चर्चा न की जाये, तो यह कैसे तय होगा कि क्या सही है और क्या गलत? अगर आप ऐसा नहीं कर पायेंगे, तो आपका मन बेचैन रहेगा, दूसरे काम भी बाधित होंगे। किसी नेता के मामले में ऐसा भी हो सकता है कि जिसे उन्होंने पार्टी में शामिल किया, जिसका पालन-पोषण किया, हो सकता है कि एक दिन वही उनसे बड़ा बन जाये। अगर मेरा बेटा मुझसे बड़ा बन जाता है, तो क्या यह खुशी की बात नहीं है! पिता के रूप में यही मेरी सार्थकता है। किसने कहा कि वह हमेशा मेरे से पीछे रहेगा? फिर, जूनियर भी हमेशा सीनियर को आदर की निगाह से देखेंगे, आदरपूर्वक बात करेंगे। मतभेद प्रकट करने के दौरान, आलोचना के दौरान भी ऐसा ही बर्ताव होना चाहिए। यहां तक कि ऐसा भी हो सकता है कि जिन्होंने मुझे पार्टी में जोड़ा था, अब वे सक्रिय नहीं हैं या एक समय जो मेरे नेता थे, आज पार्टी ने सोच-विचार कर नेतृत्वकारी बॉडी में मुझे जिम्मेदारी दी है। इस स्थिति में भी मुझे उनके प्रति आदर-भाव लेकर ही चलना होगा। यही है हमारी उन्नत संस्कृति का प्रतिफलन।

जन आंदोलन, मजदूर-किसान संघर्ष, सामाजिक गतिविधियां, सांस्कृतिक गतिविधियां आदि–कुछ हद तक हम कर रहे हैं। लेकिन इन गतिविधियों में क्रांतिकारी राजनीति को कैसे ले जाया जाये, मार्क्सवाद-लेनिनवाद-कॉमरेड शिवदास घोष की शिक्षाओं को कैसे ले जाया जाये, इस मामले में आज भी बहुत सारे कॉमरेड समर्थ नहीं है। यह उन्हें सीखना है, जानना है और नेताओं को सिखाना है। हम केवल आर्थिक मांगों के लिए आंदोलन कर रहे हैं, यह तो अर्थवाद (Economism) है। लेनिन ने इसकी भर्त्सना की थी। दूसरे लोग भी तो कुछ-कुछ आर्थिक मांगों को उठाया करते हैं। अगर हम क्रांतिकारी राजनीति नहीं दे पाते हैं, वर्गीय दृष्टिकोण नहीं दे पाते हैं, तो फिर हममें और उनमें क्या अंतर रह जाता है? रूखाई से नहीं, बल्कि क्रांतिकारी राजनीति को इस तरह से लोगों में ले जाना होगा, जिससे कि वे समझ सकें। आपको मार्क्सवाद को अमल में लाना है, आपको पूंजीवाद के खिलाफ क्रांति करनी है–ऐसी कुछ बातों को ऐसे ही नहीं बिखेर देना है। इन बातों को उनके जीवन की समस्याओं से जोड़कर बताना होगा। यह एक कला है। इसका अभ्यास करते-करते आपको सीखना होगा। कोई इसे क्लास लगाकर किसी को सिखा नहीं सकता। इसे अभ्यास से सीखना होता है। लेकिन यह काम करना है। इस मामले में हममें खामियां हैं, कमजोरियां हैं। यही वजह है कि कॉमरेड लोग अनेक लोगों के संपर्क में आते तो हैं, लेकिन वे उन्हें पार्टीजन नहीं बना पाते, वे पार्टी से जुड़ नहीं पाते।

एक और बात मैं कहूंगा। जो समर्थक और शुभचिंतक हैं, उन्हें भी पार्टी का संसाधन समझना चाहिए। उनकी भी राय लेनी होगी, उनसे भी सुझाव मांगना होगा। हमारे कई कॉमरेडों ने एक समय में एक अच्छी भूमिका निभायी थी। चाहे शारीरिक कारणों से हो, चाहे पारिवारिक समस्याओं से जूझने में सक्षम न होने के कारण हो या फिर नेतृत्व की गलत देखरेख (Tackling) की वजह से हो, अब वे निष्क्रिय हैं। उन्होंने एक समय जो सेवा प्रदान की थी, उसके प्रति आदर-भाव रखते हुए, उनसे संपर्क बनाये रखना, उनसे भी राय लेना–ये काम करने होंगे। मैं यह भी कहूंगा कि जो कॉमरेड शहीद हो गये हैं, जो जेलों में हैं तथा ऐसे बहुत से कॉमरेड, जिनकी बुढ़ापे की वजह से मौत हो गयी है, पार्टी कॉमरेड उन सभी कॉमरेडों के परिवारों से भी सम्पर्क बनाये रखें। पार्टी को उनका आभार व्यक्त करना चाहिए। ऐसा उन्हें दिखाने या खुश करने के लिए नहीं करना चाहिए। हम मानते हैं कि पार्टी को मजबूत करने में उनका योगदान रहा है और उनके उस योगदान को पार्टी आदरपूर्वक स्वीकार करती है। विरोधी पक्ष के बयानों का तर्कों से मुकाबला करें। अगर वे दुष्प्रचार करते हैं, भद्दी टिप्पणी करते हैं, तो आप गुस्से में बौखलाकर रुचि-विरोधी टिप्पणी या आचरण न करें। हमें हमेशा अपने रुचि-संस्कृति को बरकरार रखना है।

अंत में मुझे कहना है कि दुनिया की जो परिस्थिति तैयार हो रही है, पूंजीवाद का जो संकट है–इसी बीच सवाल उठने लगे हैं तथा आनेवाले दिनों में ये सवाल और भी जोरदार ढंग से उठेंगे कि इससे छुटकारा कैसे मिलेगा? मार्क्सवाद-लेनिनवाद-कॉमरेड शिवदास घोष की विचारधारा ही इससे छुटकारा दिला सकती है–इस बात को अच्छी तरह से समझाने का अवसर आ गया है। हमें तर्क के जरिये दिखाना होगा। पहली बात यह कि समाजवाद ने कितनी श्रेष्ठता का परिचय दिया था। इसे देखकर बुर्जुआ दुनिया के श्रेष्ठ मनीषियों ने मुग्ध होकर उसका अभिनन्दन किया था। नवम्बर क्रांति के शताब्दी वर्ष पर हमने कुछ दस्तावेज प्रकाशित किये थे। वहां से संग्रह कर, समाजवाद की श्रेष्ठता को विभिन्न क्षेत्रों में बिन्दुवार दिखाना होगा। दिखाना होगा कि पूंजीवाद अनिवार्य तौर पर भयानक संकट पैदा करेगा, केवल समाजवाद ही सभी संकटों से रक्षा कर सकता है और लेनिन-स्तालिन के नेतृत्व में सोवियत संघ ने इस बात को इतिहास में साबित कर दिया है। समाजवाद क्यों ढह गया तथा इस तरह की तबाही आ सकती है–इस संबंध में मार्क्स ने क्या कहा था, लेनिन ने क्या कहा था, माओ त्से-तुंग ने क्या कहा था और सबसे बड़ी बात यह है कि इस संबंध में कॉमरेड शिवदास घोष ने क्या कहा था–इन बातों को पेश करना होगा। इन मसलों पर हमने जो चर्चाएं की हैं, उनमें कॉमरेड शिवदास घोष की चर्चाओं और कॉमरेड शिवदास घोष शिक्षाओं के आधार पर और भी जो सब चर्चाएं हमने की हैं, उन तमाम चर्चाओं को लोगों के बीच ले जाना होगा। इसके साथ ही स्तालिन के बारे में जो हमारा मूल्यांकन है, उसे भी लोगों के बीच ले जाना होगा। कॉमरेड घोष ने चेतावनी देते हुए कहा था कि स्तालिन पर हमला करने का मतलब ही है लेनिनवाद पर हमला करना, मार्क्सवाद पर हमला करना। इसका मतलब ही है संशोधनवाद की बाढ़ ला देना, प्रतिक्रांति को अंजाम देना। हुआ भी ऐसा ही। बुर्जुआ एजेंट प्रतिक्रांतिकारी ख्रुश्चेव और साम्राज्यवादियों-पूंजीपतियों ने पूरी दुनिया में स्तालिन के खिलाफ निन्दा अभियान चलाया। अपने बेशकीमती वक्तव्य 'स्तालिन के खिलाफ सी.पी.एस.यू. द्वारा उठाये कदमों के प्रसंग में' कॉमरेड शिवदास घोष ने दिखाया था कि स्तालिन कितने महान व्यक्ति थे। बाद में मैंने भी उनकी शिक्षाओं के आधार पर कुछ चर्चाएं करते हुए इसी बात को दिखाया। इन बातों को कॉमरेडों को अच्छी तरह से जानना होगा, उन्हें बताना होगा। गौर कीजिए कि पूंजीवाद के इस भयानक संकट को देखकर लोग कहीं फिर से मार्क्सवाद-लेनिनवाद की ओर, समाजवाद की ओर आकर्षित न हो जायें, इस वजह से भयभीत बुर्जुआ अर्थशास्त्री तरह-तरह के सिद्धांत पेश कर रहे हैं। बुद्धिजीवियों का एक तबका तथा मीडिया फिर से मार्क्सवाद और समाजवाद के खिलाफ, महान स्तालिन के खिलाफ तरह-तरह के दुष्प्रचार चला रहा है, निन्दा अभियान चला रहा है। हमें इन सबके खिलाफ लड़ना होगा। यह हमारा तात्कालिक कार्यभार है। इसके लिए कॉमरेडों को बारीकी से पढ़ना होगा, तमाम बातें जाननी होंगी और उसके आधार पर वैचारिक संघर्ष चलाना होगा। दिखाना होगा कि समाजवाद ने मानव सभ्यता को क्या-क्या दिया है। फिर भी लोग सवाल उठायेंगे कि समाजवाद में गिरावट आने की वजह क्या थी? दिखाना होगा कि यह मार्क्सवाद की विफलता नहीं है, समाजवाद की विफलता नहीं है, इन-इन कारणों से ऐसा हुआ। इसी क्रम में लोग कहेंगे कि स्तालिन तानाशाह था। वहां हमें दिखाना होगा कि स्तालिन तानाशाह नहीं थे। हमें दिखाना होगा कि वे कितने महान इंसान थे। स्तालिन का चरित्र कैसा था, इसके बारे में कॉमरेडों को अच्छी तरह जानना होगा। इस संकट में फंसकर बहुत से विचारशील लोग इससे निकलने का रास्ता ढूंढ़ेंगे, इस स्थिति से छुटकारा पाने का उपाय ढूंढ़ेंगे और वहां हमें जवाब देना है। इस संघर्ष को और अधिक महत्व दिये जाने की जरूरत है।

मैंने बहुत समय ले लिया। पहले तो मुझे लगा था कि मैं ज्यादा कुछ नहीं कह पाऊंगा। लेकिन चर्चा में प्रवेश कर जाने पर मुझे समय का ध्यान नहीं रहा। फिर भी कह रहा हूं कि दुनिया के इन हालात, भारत के इन हालात को देखकर मैं मानसिक पीड़ा में हूं। इस हालत में, हम क्रांतिकारी कुछ नहीं कर पा रहे हैं। इसलिए पार्टी की ताकत का बढ़ना बहुत आवश्यक है। हम मार्क्सवाद-लेनिनवाद-कॉमरेड शिवदास घोष विचार को हथियार बनाकर इस देश में पूंजीवाद के खिलाफ और भी तेज संघर्ष कर सकें और उसके जरिये विश्व क्रांति में मददगार बन सकें– यहां के कॉमरेड तथा बाहर जो कॉमरेड हैं, आप तमाम कॉमरेड इस परिस्थिति में फिर नये सिरे से यह संकल्प लें। 24 अप्रैल मनाने का तात्पर्य इसी में है।

Printed and published by Com. Satyawan on behalf of the Central Committee of the Socialist Unity Centre of India (Communist) and printed at M/s Balaji Offset Printers, 315/21, Shahzada Bagh, Daya Basti, Delhi and published at 3A/38, WEA, Satnagar, Karol Bagh, New Delhi-110005. Editor: Com. Satyawan, Member, Central Committee, SUCI(C)."
Email: sarvaharadrishtikon@gmail.com , sarvaharadrishtikon@yahoo.com फोन नं. : 011-25726631, 9868350503